कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः12, अंकः 12
सितम्बर 2013

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा

संरक्षक सदस्य
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया,उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया

विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

सहयोग राशि

एक प्रति	: रु0 10/–
वार्षिक	: रु0 110/–
पंचवर्षीय	: रु0 500/–
आजीवन सदस्य	: रु0 1500/–
संरक्षक सदस्य	: रु0 5000/–

संपादकीय कार्यालय
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com
सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस, बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित कराया गया.

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

इस अंक में......

संवैधानिक अनिवार्यता के मध्य-हिन्दी 06
–सत्यवान नायक

हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा 09
–दर्शन सिंह रावत

हिन्दीः कल, आज और कल 10
–एस.के.तिवारी

बचपन छीनते ये आधुनिक प्ले स्कूल 16
–मुखराम माकड़ 'माहिर'

........13

डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एक निराला व्यक्तित्व–........18
–आर.मुत्थुस्वामी

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग 04
अपनी बातः भ्रष्टाचार की जड़ है शिक्षा में भ्रष्टाचार 05
परिचिर्चाः शिक्षा में भ्रष्टाचारः कारण एवं निवारण 11
(शशांक मिश्र भारती, महेन्द्र कुमार अग्रवाल, ओम प्रकाश त्रिपाठी)
जानकारी 15
हिन्दीत्तर भाषीः आचार्य पांडुरंग पराते, जे.वी.नागरत्नमा 20
कविताएंः
डॉ. दिवाकर दिनेश गौड़, सुरेख शर्मा, रामआसरे गोयल, पंकज मिश्र 'अटल', आचार्य भगवान देव 'चैतन्य', डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा, आचार्य शिव प्रसाद राजभर, रामकेवल 08, 21, 22
आध्यात्मः जीवन के उस पार –डॉ० अरुण कुमार आनंद 25
स्वास्थ्य 27
कहानीः चित् भी अपनी ....अपनी, जी.सी. भट्टाचार्य 23
आपकी डाक 29
साहित्य समाचार– 30, 31
लघु कथाएँः सुनीता शर्मा, सुर्कीति भटनागर, किशन लाल शर्मा, शबनम शर्मा, रोहित यादव, गणेश प्रसाद महतो, शबनम शर्मा 18, 33
समीक्षा 34

आलस्य, जीवन की सबसे बड़ा शत्रु है. व्यक्ति निष्क्रिय होकर अपना अमूल्य जीवन बेकार ही खोता रहता है, उसमें उत्साह नहीं होता वह संसार में केवल देखने के लिए जीता है.

आलसी पड़े पड़े न मालूम कहां की कल्पनाएं किया करता है, उसकी कल्पनाओं में परिणाम की कोई आशा नहीं होती है. कोई स्थायित्व भी नहीं होता है. रुके हुए पानी की तरह वह दूषित हो जाता है और अपने स्वास्थ्य, सौन्दर्य को शीघ्र खो बैठता है.

आलसी सदा दूसरों का मुंह जोहा करता है, उसमें कार्य करने की शक्ति का अभाव होता है. प्रत्येक क्षेत्र में असफलता ही उसे हाथ लगती है.

जिसकी एक आवाज से सारे स्वर एक हो जाते है, जिसकी एक मुस्कान से असंख्य पुरुष उठते हैं और जिसकी एक चाल पर दुनिया चल उठती है, वह कौन है? वह सच्चा कर्मवीर है. वहीं सच्चा कर्मनिष्ठ भी है.

जिसकी एक कड़क से बिजलियां गिरने लगें, जिसकी एक धमक से मेदनी कांपने लगे, और जिसकी एक चितवन से दुनिया झुकने लगे वह कौन है? यह योद्धा है.

जिस कार्य की करने की नसीहत आप दूसरों को देते हैं, आप उसे स्वयम् करें. आपको अमुक कार्य करते हुए देखकर दूसरे भी आपका स्वतः अनुसरण करने लगेंगें. जिस कार्य को आप नहीं करते आप दूसरों से कराने की लाख कोशिश करें, वे कदापि नहीं करेंगे

प्रत्येक मानव चाहता है कि सब लोग उसे प्यार करें, परन्तु वह स्वतः सब लोगों से प्यार नहीं करता.

प्रेम तो सब लोग करना चाहते है, प्रेम का ढोंग तो सब जानते हैं, प्रेम की कविता सब पढ़ लेते हैं; किन्तु सच्चा प्रेमी वही है, जिसे ऐसे बाह्य आडम्बर नहीं आते, उसका सच्चे हृदय से लगाव होता है.

-दाउजी

आदाब अर्ज़ है

मानवधर्म

यदि कर न सको कल्याण किसी का,
तो बुरा भी कभी मत करना।
पिलाने को यदि मिले न अमृत,
तो ज़हर पिलाने से भी डरना।
पहले अपने को तौलो,
फिर मुँख बाहर उसको करना।
किसी का घर यदि बना न सकना,
तो झोंपड़ियाँ भी न जलने देना।
घाव की यदि दवा न कर सकना,
तो उस पर खारा न नमक लगाना।
मानव बन कर यदि सेवा कर न सको,
तो दानव बनने का न ध्यान लगाना।
फूल बन यदि सुरभि फैला न सको,
तो काँटें बन न किसी को चुभना।
दीन दुखियों की सेवा यदि कर न सको,
तो उनके दुःख को न कभी बढ़ाना।
रोशनी बन प्रकाश यदि दे न सको,
तो अंधकार भी मत बनना।
बनना हो तो इन्सान बनो,
हैवान बन कभी न सम्मुख आना।
नैतिक यदि बन न सको,
तो दुराचारी भी मत बनना।
कर न सको कल्याण किसी का,
तो बुरा का भी न स्वप्न देखना।
छू न सको यदि चरण किसी का,
तो हाथ जोड़ वन्दन करना।

-**ओमप्रकाश त्रिपाठी**, सोनभद्र, उ.प्र.

('प्रयास' काव्य संग्रह से-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रकाशित)

शिक्षा में छुपा है भ्रष्टाचार

आज हम हर तरफ जहां देखो भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार.... देखते, सुनते, पढ़ते, झेलते रहते हैं. आम आदमी इस भ्रष्टाचार रूपी समस्या से इतना त्रस्त हो गया है कि अपना सर पीटने को मजबूर है. आखिर कैसे छुटकारा मिले इससे. अरे भाई! छुटकारा मिलेगा कहां से जब हमारी जड़ यानी शिक्षा में ही भ्रष्टाचार का गहन प्रवेश है तो अन्य जगह प्रवेश क्यों नहीं होगा. पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश के समय ही दान दीजिए प्रवेश लीजिए. आये दिन सिर्फ और सिर्फ पैसे का खेल चल रहा है शिक्षा के मंदिरों में. हमारा बच्चा जो बचपन से देख रहा है कि पैसा दीजिए प्रवेश लीजिए, पैसा दीजिए कक्षा मॉनीटर, लाल, पीला, नीला, हरा घर (रेड, ग्रीन, ब्लू हाउस) का नेता बन जाईए. स्कूल से बच्चा अनुपस्थित है पैसा दीजिए, बच्चा देर से आया पैसा दीजिए, ड्रेस नहीं पहन कर आया, गंदा है, जूता अलग है, टाई पहनकर नहीं आया आदि आदि पैसा दीजिए, बच्चा टेस्ट में फेल है पैसा दीजिए और पास कराइए. अब आते हैं माध्यमिक स्तर पर इनमें पैसे का खेल इतना निराला है कि आप अमेरिका में रहो, पैसा दो और प्रमाणपत्र (काग़ज) ले जाओ, तकनीकी शिक्षा में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा दिया आपने. आपकी तीन-चार लाख भी रेंक अगर आई है तो आपको इंजीनियरी एवं डाक्टरी पढ़ने का मौका मिलेगा बस पैसा फेंकते रहिए. यानि पैसा फेंको तमाशा देखो. पूर्व प्राथमिक विद्यालय से लेकर उच्च स्तरीय शिक्षण संस्थानों में अयोग्य शिक्षक हैं. जिनके पास खुद उस स्तर की डिग्री तक नहीं होती जिसको वह पढ़ा रहे हैं. जिनको सिविल, मेक्निकल, डॉक्टरी की प्राथमिक जानकारी तक नहीं वे पढ़ा रहे हैं. क्योंकि वे कम पैसे में उपलब्ध है और प्रबंधकों को पैसा बनाने का मोका मिल रहा है.

सरकारी स्तर पर इन विद्यालयों/महाविद्यालयों/तकनीकी संस्थानों को मान्यता देते समय यह भी नहीं देखा जाता कि उनके पास सम्बन्धित कक्षाओं के लिए, तकनीकी पाठ्यक्रम को चलाने के लिए संसाधन है भी या नहीं. बस पैसा दीजिए. एक कमरे में इंजीनियरिंग कॉलेज, महाविद्यालय की मान्यता ले लीजिए. इन संस्थानों को खुलने के बाद इनकी जांच करने की कोई आवश्यकता भी महसूस नहीं की जाती कि कल के देश के भविष्य को सुधारने व संवारने वाले ये संस्थान क्या शिक्षा दे रहे हैं. टीसी काउन्टर साइन कराने से लेकर मान्यता लेने तक के खेल में केवल पैसा का खेल ही चलता हैं. ऐसे में जो अगुंलियों पर गिनती के संस्थान हैं, जो वास्तव में कुछ करना चाहते हैं, देश के भविष्य व बच्चों के प्रति सजग हैं, उन्हें मान्यता देने के लिए इतने पापड़ बेलने पड़ जाएंगे कि या तो मैदान छोड़ कर भाग जाते हैं या पैसा के खेल में शामिल हो जाते हैं.

ऐसे में जब हमारा बच्चा यह देखता है कि हर जगह तो पैसे का खेल ही चल रहा हैं. क्यों न हम भी पैसे का खेल खेलें. हमारी शिक्षा व्यवस्था पूरी तरह से मुद्रा पर आधारित हो गई है. आज एक गरीब या निम्न मध्यम वर्गीय परिवार का बच्चा चाहें वह कितना हूं होनहार हो चाह कर भी अच्छी शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकता. चाहे राज्य सरकारें व केन्द्र सरकार कितने दावे कर लें. कितना भी छात्रवृत्ति, शिक्षा ऋण की सुविधा प्रदान कर दें. ये भी उन्हीं को मिलते हैं जिनके पास पैसे हैं. यानि पैसा नहीं तो शिक्षा नहीं. ऐसे परिवेश में पला-बढ़ा हमारा बच्चा जब कल को किसी पद पर आसीन होगा तो क्या वह ईमानदारी की सोचेगा? क्या उसके मन में यह भावना नहीं आएगी कि उसके माता-पिता ने कितने पैसे दे देकर उसे इस मुकाम तक पहुंचाया है. भले ही वह बच्चा पैसे अपने माता-पिता को न दें लेकिन वह पैसे बटोरने की सोचने का मजबूर होगा. हमें जरूरत है सबसे पहले शिक्षा में से भ्रष्टाचार को दूर करने का. आइए हम मिलकर इसके लिए कम से कम एक दीये की लौ तो जलाए. पूरा दीपक न जले, पूरे देश राज्य, जिला, तहसील में उजाला भले ही न हो, कम से कम एक घर में, एक कमरे में उजाला तो होगा. शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार को मिटाने का संकल्प लें. हम शिक्षा के लिए अनावश्यक एक पैसा न देने की कसमें खाएं.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संवैधानिक अनिवार्यता के मध्य-हिन्दी

बहुभाषी होना गर्व की बात है. किसी भी उपवन में अगर रंग-बिरंगे फूल खिले हों तो उसकी छटा मोहक हो जाती है. परन्तु इन फूलों को एक साथ पिरोकर माला बनाने के लिए एक मजबूत सूत की जरूरत है जो सेतु-सूत है हिन्दी.
हम हिन्दी के प्रति भावुक तो हैं परन्तु इसकी समस्या के प्रति जागरूक नहीं है.

-सत्यवान नायक, भिलाई, छ.ग.

आज भारत कई समृद्ध भाषाओं का स्वामी है. इन भाषाओं के माध्यम से विपुल सृजनात्मक सम्पदाओं, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य व संस्कारों तथा लोक संस्कृतियों व परम्पराओं को संजोकर रखने में समर्थ हो सका है.

भाषा मनुष्य का सबसे क्रांतिकारी आविष्कार है. पृथ्वी हो सकता है कि किसी विधाता ने रची हो, लेकिन उसे संसार में बदला है भाषा ने. संसार भाषा का परिणाम है. परन्तु आज यह विडम्बना है कि भाषा पर सबसे गहरा संकट है बावजूद इसके कि जिस ज्ञान-विज्ञान का आज संसार-व्यापी वर्चस्व है, वह भाषा की ही उपज है.

दो शताब्दियों के सन्धिस्थल पर हम खड़े हैं. जहां भूमण्डीकरण, विश्व बाजार व्यवस्था, संचार व सूचना क्रान्ति को हम छोड़कर चल नहीं सकते. अतः इन परिस्थितियों ने सर्वाधिक आघात भारतीय भाषाओं पर किया है. अतः भाषा को इन सभी परिस्थितियों से संतुलन बनाकर चलने का प्रयास करना होगा.

बहुभाषी होना हमारे लिये निश्चित ही गर्व की बात है. किसी भी उपवन में अगर रंग-बिरंगे फूल खिले हों तो उसकी मोहक छटा देखते ही बनती है. परन्तु इन फूलों को एक साथ पिरोकर माला बनाने के लिए एक मजबूत व सुदृढ़ सूत की जरुरत होगी जो इन पुष्पों की सुंदरता को नष्ट किये बिना इसके मध्य से गुजरकर सबको एक सूत्र में बांधकर माला के रूप में प्रतिष्ठित कर सके. यह सेतु-सूत है हिन्दी.

संवैधानिक मान्यता और देश की आजादी के वर्षो बाद भी हम अपनी राष्ट्रभाषा को स्थापित करने में सफल नहीं हो पाये. इसका प्रमुख कारण है कि हम हिन्दी के प्रति भावुक तो हैं परन्तु इसकी समस्या के प्रति जागरूक नहीं है. अब प्रश्न यह उठता है कि राष्ट्रभाषा को उसका स्थान दिलाने के लिये क्या हिन्दी भाषा का प्रयोग अनिवार्य कर दिया जाना चाहिये?

इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिये हमें बिना पूर्वाग्रह के गंभीर चिंतन करना आवश्यक है. हिन्दी की संवैधानिक स्थितियों से लेकर सभी प्रदेशों में इसके स्वीकार्यता के संबंध में विचार कर लें.

हिन्दी की संवैधानिक स्थिति पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि जब तक भारत के सभी विधायिका हिन्दी को सर्वसम्मति से स्वीकार नहीं कर लेती तब तक हिन्दी पूरे राष्ट्र में अनिवार्य रूप से लागू नहीं की जा सकती. अतः भारत के सभी प्रदेशों के विधान सभा यह प्रस्ताव पास करने से रहे और हिन्दी अनिवार्य होने से रही. यह वह स्थिति है 'न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी.' इन संवैधानिक प्रावधानों के मध्य हिन्दी की अनिवार्यता की बात करना बेमानी है.

इसके अतिरिक्त हिन्दीतर भाषी प्रदेश कभी नहीं चाहेंगे कि हिन्दी अनिवार्य कर दिया जाये. आप जैसे ही हिन्दी को अनिवार्य करने के लिये नियम बनायेंगे. हिन्दी ने आज जो सफर तय किया है उससे भी पीछे धकेलने के प्रयास शुरू कर दिये जावेंगें. कई राजनैतिक दुष्चक्र में फंसकर रह जायेगी.

एक राष्ट्र व एक भाषा के सिद्धात पर सभी सहमत है. परन्तु व्यावहारिक आचरण हमारा इससे बिलकुल भिन्न है. हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए गृहमंत्रालय के अन्तर्गत राजभाषा विभाग आज भी आंकड़ों की बाजीगरी दिखा रहा है. तमाम नामपट्ट सूचनायें, परिपत्र, कार्यालय आदेश, विज्ञापन-विज्ञप्तियों, तमाम स्टेशनरी का मुद्रण हिन्दी व अंग्रेजी दोनों में होता तो हैं. मगर वास्तविकता किसी से छिपी नहीं है. हिन्दी के प्रचार-प्रसार के नाम पर वे कोरे आडम्बर, तथा औपचारिकता के अंग बनकर रह गये हैं.

हिन्दी के कार्यक्रमों में आने वाले बड़े से बड़ा अधिकारी भी हिन्दी का गुणगान कर राष्ट्रहित में इसके महत्ता को समझाकर चला जायेगा. परन्तु अपने व्यवहार में हिन्दी का 'ह' भी नहीं लिखेगा. यही मानसिकता हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में सबसे बड़ी बाधा है.

राष्ट्र की एकता हिन्दी से ही संभव है. यह सत्य सभी जानते हैं. हिन्दी ने सभी प्रान्तीय भाषाओं को जोड़ने का कार्य किया है. अधिकांश हिन्दीत्तर भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ ग्रन्थों का अनुवाद हिन्दी में किया गया है. हिन्दीतर भाषी लेखकों को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में हिन्दी का बहुत बड़ा योगदान है. जनतंत्र में विश्वास उत्पन्न करने के लिए हिन्दी भाषा की जरूरत है. विश्व को कुटुम्ब बनाने का यह अर्थ नहीं है कि हम अपने कुटुम्ब को भुला दें. इन तमाम सच्चाइयों के बावजूद हिन्दी उपेक्षित है.

आज जितनी भी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां आई है सभी ने हिन्दी के महत्व को पहचाना है. आज जितने भी विदेशी चैनल आ रहे है सभी ने हिन्दी की जरूरत को समझा है. भारतीय समाज में हिन्दी के पैठ को भलीभांति समझ कर ही अपने चैनल के अधिकांश कार्यक्रम हिन्दी में देने को बाध्य हुए है. इन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के विज्ञापनों को ही लें वे हिन्दी में विज्ञापन देने के लिए मजबूर है. इन कम्पनियों में नौकरी के लिए अंग्रेजी का ज्ञान पहली प्राथमिकता हो सकती है परन्तु अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए हिन्दी के शरण में जाना इनकी मजबूरी है. आज हिन्दी की यह स्थिति भारतीय जनमानस में हिन्दी के महत्व को उजागर करती है.

हिन्दी का सर्वाधिक विरोध करने वाला प्रदेश तमिलनाडु में हिन्दी फिल्में सिलवर जुबली मनाती है. हिन्दी फिल्में यहां उतनी ही लोकप्रिय है जितनी की किसी हिन्दीभाषी क्षेत्र में. तमिलनाडु में हिन्दी सीखने वालों की तादात बढ़ी है. तमिल जनता भी अब समझने लगी है कि हिन्दी नहीं सीखकर अपने को सिर्फ अपने प्रदेश तक सीमित कर रहे है. इस वजह से उन्हें नुकसान हो रहा है. दक्षिण भारत में राजभाषा के रूप में हिन्दी भाषा का विरोध भले ही करते हों परन्तु सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का चलन आज से नहीं बल्कि सदियों से चला आ रहा है.

आज तकनीकी क्षेत्र हो, या कम्प्यूटर या फिर साहित्य का क्षेत्र सभी क्षेत्रों में हिन्दी ने धीरे-धीरे ही सही, पर पकड़ बनाने में सफल हुई है. हिन्दी ने यहां तक का सफर बिना किसी संवैधानिक अनिवार्यता के सफलतापूर्वक पूर्ण किया है.

हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य कर देना किसी समस्या का स्थायी हल नहीं हो सकता. वरन् अनिवार्य करने के फेर में हम एक भाषायी विवाद को खड़ा कर लेगें. जिससे हिन्दी ने आज जो स्थान बनाया है वह भी खतरे में पड़ जायेगा. डंडा लेकर किसी भी भाषा को समुचित स्थान नहीं दिला सकते हैं. भाषा अपना स्थान स्वयं बनाती है.

> राष्ट्र की एकता हिन्दी से ही संभव है. सभी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों/विदेशी चैनलों ने हिन्दी के महत्व को समझकर अपने विज्ञापनों/प्रसारणों को हिन्दी में देने को मजबूर है. कोई नहीं चाहता कि उसका बच्चा हिन्दी सीख कर पीछे रह जाये. सर्वप्रथम रोजगार के क्षेत्रों से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करनी होगी. संवैधानिक अनिवार्यता के बजाय हिन्दी को रोजगारोन्मुखी बनाया जाय तो निश्चित ही हिन्दी को प्रयोग में लाना अपने आप अनिवार्य बन जायेगा.

दक्षिण के कमला हसन, जयप्रदा जैसे अभिनेता व अभिनेत्रियों ने हिन्दी क्यों सीखीं? माननीय श्री देवगौड़ा जी ने हिन्दी सीखने की जरुरत क्यों महसूस की? क्या हिन्दी सीखना प्रधानमंत्री बनने के लिये अनिवार्य था? बिल्कुल नहीं बिना किसी अनिवार्यता के इन्हें हिन्दी सीखनें की जरुरत क्यो पड़ गई?

प्रादेशिक भाषा के साथ आप उस प्रदेश के मुख्यमंत्री बन सकते हैं. देश का प्रधानमंत्री भी बन सकते हैं. परन्तु बिना हिन्दी के ज्ञान के राष्ट्रनेता नहीं बन सकते. सर्व स्वीकार्य नहीं हो सकते. और यही बात श्री देवगौड़ा जी के समझ में आ गई. जिसके कारण उन्होंने हिन्दी सीखना व प्रयोग में लाना अनिवार्य मान लिया. यही कहानी कमल हसन व जयाप्रदा की भी है वे दक्षिण में सुपरस्टार थे. परन्तु उनकी लोकप्रियता सिर्फ दक्षिण के कुछ प्रदेशों तक सीमित होकर रह गई. जब उन्होंने हिन्दी सीख कर हिन्दी फिल्मों में काम करने लगे तब उन्हें पूरे भारतवर्ष ने जाना. इन्हें किसी कानूनी अनिवार्यता ने नहीं बल्कि व्यवसायिक जरूरतों ने हिन्दी सीखने को मजबूर किया.

भारतीय परिवारों में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में दाखिला लेने की होड़ मची है. कोई नहीं चाहता कि उसका बच्चा हिन्दी सीख कर विकास की दौड़ में पीछे रह जाये. इसके पीछे पालकों की जो सोच है वह बिल्कुल सही है. अंग्रेजी जानना सरकारी नौकरियों में अभी भी व्यवहारिक रूप से अनिवार्य बना हुआ है. संघ लोक

सेवा आयोग, प्रादेशिक सेवा आयोग, बैंक व बीमा क्षेत्र की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता बनी हुई है. सर्वप्रथम रोजगार के इन क्षेत्रों से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करनी होगी.

आज अंग्रेजी रोजगार से जुड़ी होने के कारण लोगों का अंग्रेजी की ओर भागना मजबूरी बन गई है. अतः केन्द्रीय सरकार, बैंक व बीमा तथा अन्य महत्वपूर्ण सेवाओं में बिना राष्ट्रभाषा ज्ञान के चयन न किया जाये. जिस प्रकार आज तक अंग्रेजी भाषा का ज्ञान अनिवार्य माना गया है. उसी प्रकार राजभाषा हिन्दी का ज्ञान भी अनिवार्य कर कर दें तो अवश्य ही उच्च्य पदों पर आने वालों का हिन्दी के प्रति रूझान बढ़ेगा. किसी भी प्रकार की संवैधानिक अनिवार्यता के बजाय हिन्दी को रोजगारोन्मुखी उपायों के साथ जोड़ा जाये तो निश्चित ही हिन्दी सीखनें व उसे प्रयोग करने में लाना अपने आप अनिवार्य बन जायेगा.

प्रादेशिक भाषाओं का जितना अहित अंग्रेजी के प्रसार से हुआ है उतना ही हित हिन्दी के प्रसार से हुआ है. 'गीतांजली' के हिन्दी अनुवाद ने रविन्द्र नाथ टैगोर की इस कालजयी कृति को बंगाल से निकालकर देश के घर-घर में पहुंचा दिया. यह कार्य इसके अंग्रेजी अनुवाद के साथ सम्भव नहीं था. हिन्दी का उत्थान अंग्रेजी से बैर करने से या सिर्फ अंग्रेजी के वर्चस्व को कोसने से संभव नहीं है अपितु इसे मित्रतापूर्वक होड़ से ही हिन्दी का यश बढ़ेगा. आज हिन्दी इसमें पूर्ण सक्षम है.

भारत में सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी आज सर्वाधिक स्वीकार्य है. इस सत्य से किसी को इन्कार नहीं है. हिन्दी को अनिवार्य करने का जहां तक प्रश्न है यह वर्तमान संवैधानिक शर्तो के मध्य सम्भव नहीं है. आज के राजनीतिक परिदृश्य में संविधान संशोधन करके कोई भी बखेड़ा खड़ा नहीं चाहेगा.

इसके अतिरिक्त उपलब्ध नियम कानूनों का भी हम कठोरता से अनुपालन नहीं कर पा रहे हैं. अन्यथा हिन्दी की आज ये स्थिति नहीं रहती. वर्तमान में राजभाषा अधिनियम व राजभाषा नियमों के प्रावधानों का अनुपालन सिर्फ खानापूर्ति करने तक सीमित है. अतः ऐसे में कानूनी अनिवार्यता कोई अर्थ नहीं रह जाता. हिन्दी को स्थापित करने के लिए इसे रोजगार से जोड़ना होगा.

हिन्दी क्या बिंदी

हिन्दी,
माथे की बिन्दी,
नयनों का काज़ल,
पेट की रोटी।
सुनने में लगता अच्छा
हकीकत में लगता झटका
दिखती है माथे की बिंदी
हो गई है जो चिंदी-चिंदी
अपनों ने ही इस बिंदी को
बदरंग किया है
खींच इसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया है
कहते हैं इसे नयनों का काज़ल
लेकिन बहुत है दिल घायल,
देख इसकी दारुण परिस्थिति
जिसे बुद्धि नहीं समझती
किसी ने चुपके से नयनों से कज़ल
चुरा लिया हैं.
और इसकी जगह दूसरा रंग भर दिया है
जिससे हो गई है,
हिन्दुस्तान की आंखें बदसूरत
और बिगड़ गई है इसकी सूरत।
बोला है इसे पेट की रोटी
लेकिन यह बात सच्ची कम, ज्यादा है झूठी
हिन्दी सीखने से नहीं मिलती
किसी को पेट की रोटी
हिंदी नाम की रोटी को
भारत के अधिकारी, राजनेता खा गए हैं
और इसकी आड़ में
लोगों को बेवकूफ बना रहे हैं
राष्ट्र की दुकान में
अंग्रेजी बेची जा रही है
हिंदी फेंकी जा रही है
नागरिक मांगता है हिंदी
लौटा दो मुझे माथे की बिंदी
लगा हो मेरी आंख में हिन्दी काज़ल
डाल दो मेरे पेट में हिंदी की रोटी
लेकिन बची है सिर्फ अब
हिन्दी की बोटी
अंग्रेजी की लंगोटी पहन
हिन्दुस्तान जवान हो गया है
और मित्रों गर्व से सुनो
मेरा भारत महान हो गया है।

-डॉ० दिवाकर दिनेश 'गौड़'
गोधरा, गुजरात

हिन्दी हमारी अपनी मातृभाषा, राजभाषा व राष्ट्रभाषा है. हिन्दी दिवस मनाकर इसका अपमान न करें. हिन्दी अपनाएँ भ्रष्टाचार भगाएँ।

-विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा जारी

हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा

संयुक्त राष्ट्र संघ में अंग्रेजी फ्रेंच कार्य संचालन की भाषा है. एक भाषा शोध के अनुसार विश्व में हिन्दी जानने वालों की संख्या एक अरब दो करोड़ है, जबकि चीनी भाषा जानने वाले ९० करोड़ ६ लाख है. अतः हिन्दी भाषा विश्व में पहले स्थान पर है. विश्व के १३२ देशों में भारत के २.५० करोड़ प्रवासी नागरिक हिन्दी भाषी है. श्री नरसिंह राव एवं श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री के तौर संघ में हिन्दी में भाषण देकर हिन्दी का मान बढ़ाया.

✍ दर्शन सिंह रावत,
उदयपुर, राजस्थान

हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा बनाये जाना समय की मांग है. हिन्दी विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की राजभाषा है. जनसंख्या, समृद्धि और अन्तरराष्ट्रीय सम्पर्क की दृष्टि से हिन्दी का स्थान अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है.

संयुक्त राष्ट्र संघ में अंग्रेजी फ्रेंच कार्य संचालन की भाषा है. अतः उसके कार्यालय व विशिष्ट संस्थाओं में सामान्य रूप से काम-काज अंग्रेजी व फ्रेंच में ही होता है. संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषायें अंग्रेजी, फ्रेंच, चीनी, रूसी, स्पेनिश व अरबी है, परन्तु महासभा में किसी भी भाषा में बोला जा सकता है, परन्तु प्रतिनिधि को महासभा की कार्य संचालन की भाषा में अपने भाषा का भाषान्तरण देना होता है.

संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के समय इसकी मान्यता प्राप्त भाषायें अंग्रेजी, फ्रेंच व स्पेनिश थी. 21.12. 1968 को रूसी भाषा को, 18.12. 1973 को चीनी व अरबी भाषा को मान्यता प्रदान की गयी. भाषा को स्वीकार्य करने के लिए महासभा में प्रस्ताव आता है. कार्यसमिति इस पर विचार-विमर्श करती है, फिर महासभा में बहुमत के आधार पर निर्णय होता है. प्रस्ताव स्वीकार होने पर महासभा की कार्यविधि नियमावली के आठवें भाग (रूल 51–57 तक) में संशोधन किया जाता है. महासभा में हर सदस्य का एक वोट होता है.

डॉ० जयन्ती प्रसाद नौटियाल के भाषा शोध 2005 के अनुसार विश्व में हिन्दी जानने वालों की संख्या एक अरब दो करोड़ है, जबकि चीनी भाषा जानने वाले 90 करोड़ 6 लाख है. अतः हिन्दी भाषा विश्व में पहले स्थान पर है.

महासभा प्रस्ताव पर विचार करते समय निम्न बिन्दुओं को देखती है-

1– वह भाषा संसार के कितने देशों की भाषा है?

2– उसके बोलने वालों की संख्या कितनी है?

3–राजनीतिक, आर्थिक व अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्धों की दृष्टि से उस भाषा का क्या और कितना महत्व है?

4- इस भाषा पर कितना खर्चा होगा, उसकी क्या तथा कैसे व्यवस्था होगी, उससे सम्बन्धित देशों का कितना योगदान होगा?

भारत के प्रस्ताव का समर्थन मारीशस, नेपाल, सूरीनाम, फीजी, गयाना, ट्रिनीडाड, दक्षिण अफ्रीका, इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड व अन्य देश कर सकते हैं.

विश्व के 132 देशों में भारत के 2.50 करोड़ प्रवासी नागरिक हिन्दी भाषी है, वे हिन्दी को व्यवहार में लाते हैं. हिन्दी के द्वारा वे अपनी मूल संस्कृति से जुड़े हुए है.

भारत के पूर्व विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 1978 के अधिवेशन में हिन्दी में भाषण दिये थे. इसका अन्य भाषाओं में यांत्रिक अनुवाद की व्यवस्था की गई थी. श्री नरसिंह राव एवं श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री के तौर पर हिन्दी में भाषण देकर हिन्दी का मान बढ़ाया. राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा ने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी की मान्यता के लिए निधि एकत्र कर रखी हैं.

विश्व शान्ति, विश्व बन्धुत्व, सौहार्द एवं विश्व मैत्री को मजबूत बनाने के लिए हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ में अधिकारिक भाषा के रूप में यथाशीघ्र स्वीकृति मिलनी चाहिए. हमें अपनी अस्मिता, स्वाभिमान व राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए दृढ़ संकल्प के साथ इस विषय पर ठोस कार्यवाही करनी चाहिए.

हिन्दी : कल, आज और कल

विश्व भाषा समुदाय में तीसरा स्थान रखने वाली 'हिन्दी' के लिये संसद ने राजभाषा अधिनियम पारित किया. आज गलत शिक्षा नीति हमें गलत रास्ते पर ले जा रही है. हिन्दी की रोटी खाने वाले भी हिन्दी के प्रति वफादार नहीं हैं. विद्यालयों में हिन्दी को बेकार विषय समझकर छात्र-छात्राओं पर नकारात्मक प्रभाव डाला जाता है. अंग्रेजी नहीं बोल पाने वाले व्यक्ति का आत्मविश्वास तोड़ दिया जाता है. लार्ड मैकाले की योजना पूर्णतः सफल रही है.

✍ एस.के.तिवारी,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

राष्ट्रभाषा किसी भी देश की संस्कृति की वाहक व जन-मन के विचारों की अभिव्यक्ति का साधन व विकास का आधार होती है. समस्त लोक साहित्य, लोक कलाएँ, सभ्यता, संस्कृति व ज्ञान-विज्ञान राष्ट्रभाषा में ही संरक्षित होती है. राष्ट्रभाषा राज्यादेश से नहीं बल्कि व्यावहारिक क्षमताओं व लोकमानस का स्वीकार्यता से अंगीकृत होती है.

विश्व भाषा समुदाय में अपना तीसरा स्थान रखने वाली 'हिन्दी' के लिये 10 मई 1963 को संसद ने राजभाषा अधिनियम पारित किया. साथ ही सरकारी कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के हेतु 26 जून 1975 को राजभाषा विभाग की स्थापना की गई तथा अनुच्छेद 343 (1) में संविधान ने यह निर्दिष्ट किया कि संघ सरकार की भाषा हिन्दी होगी. राष्ट्रभाषा ही राजभाषा व सम्पर्क भाषा हो तो जनता को सुविधा रहती है. राजभाषा समय-समय पर बदलती रहती है, उदाहरणार्थ संस्कृत, पाली, अपभ्रंश, फारसी व अंग्रेजी आदि. राजभाषा के अतिरिक्त विभिन्न प्रदेशों या जनपदों के मध्य सम्पर्क संबंधों के लिए जिस भाषा के रुप में विकसित करने के प्रयत्न किए जाते हैं, वह सम्पर्क भाषा कहलाती है.

प्राचीन काल से हमारी राष्ट्रभाषा संस्कृत रही है. कालान्तर में वह स्थान हिन्दी ने ले लिया है किन्तु आज भी हिन्दी, संस्कृत के समकक्ष समृद्ध नहीं हो पाई है. आज के समय में भी, जब हमें आवश्यकता पड़ती है, हमें संस्कृत ग्रंथों का सहारा लेना पड़ता है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि अंग्रेजी आती भी नहीं और जरती भी नहीं. गलत शिक्षा नीति हमें गलत रास्ते पर ले जा रही है. हिन्दी की रोटी खाने वाले भी हिन्दी के प्रति वफादार नहीं हैं. विद्यालयों के प्राचार्य हिन्दी को बेकार विषय समझकर छात्र-छात्राओं पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं. कुछ संस्था प्रधान तो अंग्रेजों की अवैध संतान होने को प्रमाणित करते हुए हिन्दी विषय को ही अपने विद्यालयों से समाप्त करने में लगे हुए हैं.

अंग्रेजी नहीं बोल पाने वाले व्यक्ति का आत्मविश्वास तोड दिया जाता है. लार्ड मैकाले की योजना पूर्णतः सफल रही है. अंग्रेजों के जाने के बाद भी भारत में अंग्रेजियत की हुकूमत जारी है. अंग्रेजियत के गुलाम मानसिकता के लोग ही उच्च्व पदों पर बैठे हैं. अंग्रेजी के वर्चस्व को जारी रखकर भारत की बड़ी जनसंख्या को हाशिये पर ढकेल दिये जाने का षडयंत्र चल रहा है. भारतीय संसद में किये जाने वाले कामकाज व दिए जाने भाषणों का ही विश्लेषण किया जाए तो जाना जा सकता है कि हिन्दी ही नहीं समस्त भारतीय भाषाओं को पीछे ढकेला जा रहा है. इस सन्दर्भ में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का कथन कि भारत की अपेक्षा न्यूयार्क में हिन्दी बोलना अधिक सुरक्षित है, भारतीय मानसिकता को स्पष्ट करने में अधिक सहायक है.

हमारे अधिनियम, अध्यादेश, नियम व उप-नियम मूलरूप से हिन्दी में बनने लगे और इस जुमले से पीछा छूटे कि यदि अंग्रेजी व हिन्दी अनुवाद में कोई विरोधभास पाया जाता है तो अंग्रेजी रूप ही मान्य होगा. तभी सही मायनों में हिन्दी को अपना सही स्थान प्राप्त होगा. हिन्दी भारत में राजभाषा का स्थान प्राप्त नहीं कर सकी है और हम आंकड़ों में उलझकर विश्व भाषा बनाने की कपोल कल्पनाएँ करने लगे हैं. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था "मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है जितना शिशु के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध."

भाषा जब राजनीति का आधार बन जाये तो उस भाषा का विकास राजनेताओं के राजनीतिक दाव-पेंचों में उलझकर रह जाता है. वही यहाँ हो रहा है. वर्तमान में

'kSk i"B 15.........पर

शिक्षा में भ्रष्टाचारः कारण एवं निवारण

-शशांक मिश्र भारती
शिक्षक, राजकीय इण्टर कॉलेज, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड मो०: 9457044390

भ्रष्टाचार दो शब्दों से मिलकर बना है. भ्रष्ट+आचार. जिसका अर्थ हुआ भ्रष्ट आचरण. यानि जब कोई कार्य नियमों का उल्लंघन कर अथवा गलत तरीके से किया जाय तो वही भ्रष्टाचार है. देश का प्रत्येक दसवीं शीर्ष सेवा में स्वास्थ्य सेवा नम्बर एक, ऊर्जा दो, और शिक्षा नम्बर तीन पर है. यही नहीं देश की न्यायिक सेवा में Hkh ,d vuqeku dsv uqlkj 2510 करोड़ रुपये बतौर घूस दिये जाते हैं.

भ्रष्टाचार में शिक्षा जगत काफी पीछे था. अपनी पारदर्शिता के स्तर पर निरन्तर आगे बढ़ रहा था. लेकिन जब शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को अपने यहां ट्यूशन पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया तो इस विभाग का नम्बर भी तीसरा हो गया. इसके साथ ही माध्यमिक स्तर से डिग्री, नियुक्ति-पत्र लेने, व्यवसाय चयन, शिक्षण/चिकित्सा अवकाश, विविध देयकों के भुगतान आदि के लिए सुविधा शुल्क की मांग, अनावश्यक कमियां निकालना आदि के कारण शैक्षिक जगत भ्रष्टाचार के चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया. कभी महामुनि भर्तृहरि द्वारा कही जाने वाली कि 'किं न साधयति कल्पलतेव विद्या' भ्रष्टाचार के मकड़जाल में उलझ गयी. सत्यमेव जयते का सिद्धात भ्रष्टाचार मेव जयते बन गया.

यदि हम शैक्षिक जगत में भ्रष्टाचार के संभावित कारणों पर विचार करें तो निजी, गैर संस्थाओं में प्रबन्धतंत्र की भूमिका, शासकीय में अधिकारी वर्ग की अधीनस्थों पर अधिक निर्भरता, निजी संस्थाओं में कम वेतन देना और अधिक पर हस्ताक्षर करवाना, सत्रारम्भ में छंटनी करना, महिला शिक्षकों का शोषण, कहीं-कहीं पर प्रबन्धकों द्वारा शैक्षिक प्रमाणपत्र अपने पास रखकर मनमानी करना, प्रवेश प्रक्रिया, डिग्री प्राप्ति, साक्षात्कार, प्रवेश परीक्षाओं व नियुक्ति में खुला व्यापार, प्रायोगिक परीक्षाओं का धन-बल से अंकन किया जाना आदि माने जा सकते हैं. वहीं वर्तमान समय में बढ़ रही रिश्वत खोरी की प्रवृत्ति, स्वार्थपरता, जमाखोरी की भावना, जातिवादी धारणा, नैतिकता की कमी, श्रम के प्रति उदासीनता, कर्त्तव्यनिष्ठा में कमी, शिक्षा का राजनीतिकरण, पदोन्नति, द्वेष की भावना आदि भी शैक्षिक जगत में भ्रष्टाचार के कारण है. वहीं कुकुरमुत्ते की तरह गैर पंजीकृत संस्थाओं, कोचिंगों का खुलना, मनमाने पाठ्यक्रमों का प्रयोग, उनमें कम पढ़े लिखों को बच्चों को सौंपना कहीं न कहीं भ्रष्टाचार को बढ़ाता है. बच्चों को ट्यूशन के लिए प्रेरित करना, न पढ़ने वालों को कम अंक देना भी इसी श्रेणी में आता है.

शैक्षिक जगत में भ्रष्टाचार के संभावित कारणों में निजी संस्थाओं में प्रबन्धतंत्र की भूमिका, अधिकारी वर्ग की अपने अधीनस्थों पर निर्भरता, निजी संस्थाओं में कम वेतन, सत्रारम्भ में छंटनी, महिला शिक्षकों का शोषण, प्रवेश प्रक्रिया इत्यादि है.

प्राचीन काल में गुरु द्रोण को अभावों के चलते दूध के स्थान पर आटा घोलकर अपने पुत्र अश्वत्थामा को पिलाना पड़ा था जबकि आज ऐसी स्थिति नहीं है. शिक्षकों को पर्याप्त वेतन, सुविधायें मिल रही हैं. शिक्षकों को ट्यूशन की प्रवृत्ति से बचना चाहिए.

शिक्षा-शिक्षण प्रभावित हो रहा है, बल्कि शिक्षकों में दायित्व निर्वहन की भावना कम हो रही है. वह सम्पूर्ण पाठ्य-शिक्षण-प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को न पढ़ाकर टाप टेन, महत्वपूर्ण जैसी पद्धतियों का सहयोग ले रहा है. शिक्षा का स्तर गिर रहा है. शिक्षक की मानसिकता, व्यवहार व आचरण भी प्रभावित हो रहा है. उदाहरणार्थ-यदि किसी अध्यापक के चिकित्सा, बोनस, टी.ए., डी.ए., जीपीएफ, अग्रिम आदि के सभी देयक निश्चित प्रतिशत लेकर पास किये जा रहे हैं तो क्या वह वैसा ही निष्ठापूर्वक अपनी कक्षा में शिक्षण कार्य करेगा जैसाकि इन सभी के बगैर प्रतिशत दिये पास होने पर करता था. मुझे तो नहीं लगता.

निजी संस्थाओं में कम वेतन वाले अध्यापकों की मनः स्थिति किसी से छिपी नहीं है. गत कई वर्षो से माध्यमिक शिक्षा में कतिपय संस्थायें,

आज हमें शिक्षा की नहीं विद्या की जरुरत है

आज की शिक्षा समय, पैसा, बुद्धि, शरीर सहित संस्कारों को होम कर देने भर की है. जिसका लाभ राजनीतिज्ञ एवं पूंजीपति वर्ग ही प्राप्त कर रहे हैं. पैसे खर्च कर डिग्री जेब में रख कर घूमते रहिये.

-महेन्द्र कुमार अग्रवाल
10, रीवा बिल्डिंग, लीडर रोड, इलाहाबाद-03 मो०: 9935396715

आधुनिकता की चकाचौध से चौधियांई आंखों से वशीभूत हमारी अन्र्तआत्मा पलक झपकते ही दुनिया भर की धन दौलत, सम्पदा, मान-सम्मान, यश, वैभव सहित राजशाही ढाढबाट के साथ विलासिता पूर्ण जीवन जीने के लिए अन्तहीन अंधी दौड़ में शामिल हो जाती है. जो हवस रूपी बीज के अंकुरों का प्रस्फुटन करके बेहया के बेल सी चारो तरफ फैलते हुए भ्रष्टाचार का बड़ा पेड़ बन जाती है.

सर्वत्र विराजमान भ्रष्टाचार विशेष रूप से शिक्षा में होना कैसे असम्भव हो सकता है? क्योंकि अब गुरूजन व शिष्य दोनों ही इसका रसास्वादन करने से पीछे नहीं रहते हैं. श्री कृष्ण ने अर्जुन को कौरव पांडव युद्ध में पहले ही मरे हुए की शिक्षा देकर वाण चलाने को क्यों कहा? अश्वत्थामा नरो वा कुंजरों वा कुजंरो शब्द धीमी आवाज में बोलने की शिक्षा क्या थी? वास्तविकता यह है कि आज की शिक्षा, समय, पैसा, बुद्धि, शरीर सहित संस्कारों को यूं ही होम कर देने भर की है. जिसका पूर्ण लाभ राजनीतिज्ञ, पूंजीपति वर्ग एवम् सर्वसम्पन्न जन ही प्राप्त कर रहे हैं. आज आप जीवन के 18—20 वर्ष लाखों रुपये खर्च कर लाखों ग्रेजुएट, प्रोस्टग्रेजुएट जैसी डिग्री जेब में रख कर घूमते रहिये. एक अदद चपरासी की भी नौकरी नहीं पा सकते हैं. इसके लिए अलग से लिखित, मौखिक, शारीरिक परीक्षा सहित भारी भरकम पहुंच सहित थैली भर कर धन देने पर भी नौकरी निश्चित नहीं हो सकती है. वैसे भी हमारी शिक्षा सिर्फ और सिर्फ किताबी जवानी जमा खर्च आधारित है. कहीं भी रोजगारपरक शिक्षा नहीं दी जाती. क्यों? क्योंकि सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोल बाला जो है.

आज हमें शिक्षा की नहीं विद्या की जरूरत है. एक ऐसी विद्या जो कम से कम, समय, पैसे में सर्वसुलभ सबकी पहुंच में, गरीब से गरीब भी प्राथमिक से उच्च विद्या सहित शिक्षा प्राप्त कर सके. जिसके प्राप्त करने के बाद शिक्षानुसार बड़ा से बड़ा पद, स्थान, नौकरी, सम्मान व व्यवसाय करना सुनिश्चित हो सके. इसके लिए किसी तरह का आरक्षण, विभेद, राजनीति, रिश्वतखोरी व धर्म सम्प्रदाय आड़े नहीं आना चाहिये. गरीब से गरीब भी यदि संस्था प्रधान, शिक्षक अपना परीक्षाफल येन-केन प्रकारेण परीक्षाओं में नकल करवाकर साध रहे हैं. परिणाम यह हो रहा है कि शिक्षा गुणात्मक दृष्टि से रसातल में जा रही है. 35 प्रतिशत न ला पाने वाला छात्र 75—80 प्रतिशत ला रहा है. वहीं 75—80 वाला 55—60 पर सिमट रहा है. अध्यापक और बच्चे दोनों अपने कर्त्तव्यों से भागने लगे हैं. फल बिना श्रम मिल रहा है.

शैक्षिक जगत में भ्रष्टाचार की समस्या के समाधान के लिए हमें शिक्षाजगत के उच्चाधिकारियों से लेकर स्वच्छकार तक की गरिमा व आचरण को बदलने का प्रयास करना होगा. प्रत्येक पहलू शिक्षक, प्रशासन, प्रबन्धक, अभिभावक, छात्र, प्रधानाचार्य, अधिकारी वर्ग आदि में अपने कर्त्तव्य निर्वहन के प्रति जागरूकता लानी होगी. साथ ही ऊपर से नीचे तक शैक्षिक जगत की गतिविधियों पर एक मजबूत गोपनीय तंत्र विकसित करना होगा. जो इन सब पर तत्काल आवश्यक व कठोर समयबद्ध कार्यवाही कर सके. अभिभावकों की जागरूकता संस्थाओं को अधिक कल्याणकारी, बच्चों को लगनशील बनायेगी, वहीं शिक्षकों के हितों की रक्षा, छात्र कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगी. शिक्षण, प्रशिक्षण, नियुक्ति, पदोन्नति, स्थानान्तरण, पेशन भुगतान आदि प्रकरणों के लिए स्पष्ट पारदर्शी नीति बनानी पड़ेगी.

शैक्षिक जगत में भ्रष्टाचार को समाप्त किये बिना स्वामी दयानन्द, विवेकानन्द, गांधी, सुभाष, टैगोर, नेहरू, अम्बेडकर, शास्त्री, कलाम जैसे शिष्यों की कल्पना नहीं की जा सकती है और न ही गुरु संदीपन, रामानन्द, चाणक्य, राधाकृष्णन व जाकिर हुसैन जैसे गुरु प्राप्त हो सकते हैं.

होनहार है तो उसे उच्च से उच्च विद्या सहित शिक्षा प्राप्त कराना सुनिश्चित हो.

यह सब तभी सम्भव हो सकेगा जब हम अपनी शिक्षा नीति में अमूल चूल परिवर्तन करके, सस्ती, सुलभ, ज्ञानवर्धक, रोजगारन्मुखी बनाये. भले ही इसके लिए अच्छा से अच्छा पारिश्रमिक प्रदान करके, योग्य, अनुभवी, कर्मठ व उच्च शिक्षित व प्रशिक्षित गुरुजनों की नियुक्ति की जाय. इससे भी किसी धर्म-सम्प्रदाय, जात-पात भेद-भाव आरक्षण इत्यादि की कोई पक्षपात की गुजाइंश नही रहनी चाहिए. वीर अभिमन्यु ने अपनी मां के पेट में ही रहकर चक्रव्यूह के छः द्वारों को भेदने की विद्या अपने पिताश्री के मुख से सुन कर सीखी एवम् चक्रव्यूह के छः द्वारों को पूरी कोशिश के साथ भेद भी दिया लेकिन सातवें द्वार की जानकारी न होने से भेद न पाने पर मृत्यु को प्राप्त हुए. कहने का तात्पर्य यह है कि आज सम्पूर्ण विद्या युक्त शिक्षा देने की आवश्यकता है.

मैं ऐसे भारत की कोशिश करूंगा, जिसमें गरीब से गरीब आदमी भी यह महसूस करे कि यह उसका देश है, जिसके निर्माण में उसकी आवाज का महत्व है.

-मोहनदास करमचंद गांधी

राजभाषा, राष्ट्रभाषा, जन-जन की भाषा हिन्दी अपनाये भ्रष्टाचार भगायें।

दाऊजी

‘सा विद्या या विमुक्तये’

किसी भी देश का विकास वहां के समुन्नत समाज और समुदाय की सशक्त कड़ी मानव के विकसित होने पर भी संभव है. बच्चा भ्रूणावस्था से ही अपने चतुर्दिक परिवेश से आच्छादित रहता है. उसके अन्दर अनेक मूल प्रवृत्तियां जन्मजात विद्यमान रहती हैं जिनका संवर्द्धन उसके स्वास्थ्य एवं वहां के वातावरण तथा उसकी संस्कृति, व्यवहार तथा परिवार की परिस्थितियों पर केन्द्रित होता है. इन सबकी विद्यमानता में शिक्षा द्वारा उनका विकास होकर उसे एक चरित्रवान मानव के रूप में सम्मुख आता है.

प्राचीन सूक्ति-‘सा विद्या या विमुक्तये’ आज भी उतनी सत्य है जितनी पहले थी. शिक्षा से यहां आशय केवल आध्यात्मिक शिक्षा से नहीं है, न विमुक्ति से आशय मृत्योपरान्त मोक्ष से है. ज्ञान में वह समस्त प्रशिक्षण समाहित है जो मानव जाति के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण है और विमुक्ति का अर्थ है-वर्तमान जीवन की भी सभी प्रकार की पराधीनताओं से मुक्ति. सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ज्ञानार्जन सच्ची शिक्षा है. वर्तमान में शुद्ध जल, पृथ्वी और शुद्ध वायु हमारे लिए अपिरिचित हो गये हैं. हम आकाश और सूर्य के अपरिमेय मूल्य को नहीं पहचानते. अगर हम पंचतत्वों का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग करें और सही तथा सन्तुलित भोजन करें तो हम युगों का काम कर सकेंगे. ज्ञानार्जन के लिए विद्यालयों की शैक्षिक व्यवस्था एवं उसके सिद्धातों में हमें भारत की आध्यात्मिक अलौकिक शक्तियों को महत्व न देकर ईश्वर में जाग्रत विश्वास

निरंतर शंका और शुद्ध जिज्ञासा किसी भी प्रकार के ज्ञानार्जन की पहली शर्त हैं. जो विनम्रता और गुरु के प्रति सम्मान प्रदान करने की कारक थी, जो वर्तमान में गतिहीन होती दिख रही हैं. कोई भी आदमी साक्षरता अथवा विद्वत्ता से आदमी नहीं बनता बल्कि सच्चे जीवन के लिए ली गई शिक्षा से बनता है. शैक्षिक व्यवस्था में जीवन मूल्यों को उपेक्षित कर मानवीय मूल्यों की अभिवृद्धि एवं उसके विकास के पहलुओं पर उचित ध्यान नहीं दीखता.

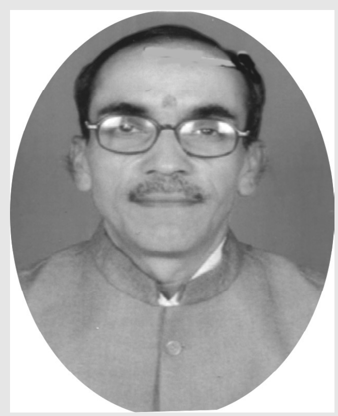

-ओम प्रकाश त्रिपाठी
राष्ट्रपति से पुरस्कृत शिक्षक, सोनभद्र, उ. प्र. मो०: ९०४४१९७६३३

एवं सेवाकार्य में उत्साह की कमी देखने को मिल रही है. निरंतर शंका और शुद्ध जिज्ञासा किसी भी प्रकार के ज्ञानार्जन की पहली शर्ते हैं. जो विनम्रता और गुरु के प्रति सम्मान प्रदान करने की कारक थी, जो वर्तमान में गतिहीन होती दिख रही हैं. कोई भी आदमी

साक्षरता अथवा विद्वत्ता से आदमी नहीं बनता बल्कि सच्चे जीवन के लिए ली गई शिक्षा से बनता है. शैक्षिक व्यवस्था में जीवन मूल्यों को उपेक्षित कर मानवीय मूल्यों की अभिवृद्धि एवं उसके विकास के पहलुओं पर उचित ध्यान नहीं दीखता. वर्तमान की अर्थव्यवस्था, यांत्रिकी, गूगल बेवसाइट, मेल एवं अन्यान्य व्यवस्थायें वैश्विक धरातल पर चकाचौंध की नई दुनिया में आप्लावित हो रही हैं.

लोकतंत्रीय व्यवस्था में लोक जीवन पर दृष्टिपात न होना देश के लिए अपमान जनक है. आज की शिक्षा व्यवस्था अर्थोर्जन का मुख्य स्रोत सी बन गयी हैं. तड़क-भड़क, शान-शौकत, बाह्याडम्बर, वेश-भूषा, जीवन शैली दुनिया के विकास की दौड़ में प्रतिस्पर्धा में हैं जिसके कारण भारतीयता एवं वहां की प्रकृति, संस्कृति, दैवी शक्तियां अपमानित होकर किंकर्त्तव्य विमूढ़ सी होती दिख रही हैं. शिक्षा के तौर तरीके, उसे सिद्धात, उसकी पाठ्यचर्चा भले ही वर्तमान की वैश्विक परिवेश में ही क्यों न हों किन्तु एकरूपता उसका श्रृंगार होना चाहिए. बुद्धि के प्रखरता भारतीय मन में सदैव से

निरंतर रही है. यहां की सभ्यता, संस्कृति, रीति रिवाज, लौकिक एवं पारलौकिक जीवन के दस्तावेज यहां की बौद्धिक क्षमता एवं कुशल क्रियाशीलता के प्रमाण हैं. निश्चित रूप से परिस्थितियों के अनुसार सब कुछ बदलता रहा है और बदलना भी चाहिए किन्तु सबके मूल में भारतीयता की जड़े न केवल गहरी वरन् दृढ़ होनी चाहिए. विकास की धारा में देश के प्रत्येक कोने की मानवीय शक्तियों को भी प्रतिस्पर्धा में सम्मिलित करने की आवश्यकता है जो वर्तमान में एक अलग दृष्टिकोण दर्शित करता है. शिक्षा व्यवस्था में पाठ्य सहभागी क्रियाओं के प्रति संवेदनशून्यता ने भी बच्चे के कोमल मन एवं शरीर को भी प्रभावित किया है. सोच की प्रखरता हेतु कहानियां एवं लोक कथाएं मजबूत भावना का निर्माण करती थीं जिसके स्थान पर क्विज की व्यवस्था तो है किन्तु उसमें हर स्तर का बच्चा अपने को योजित नहीं कर पाता, परिणामतः एक बड़ा भाग विकास की ईंट का हिस्सा नहीं बन पाता. यद्यपि यह कहना भी अनुचित न होगा कि परिस्थिति के परिवर्तन स्वरूप सबका आर्थिक एवं भौतिक स्तर ऊँचा उठा है किन्तु पिछड़ों एवं दलितों तथा उपेक्षितों के लिए उपेक्षित खेमे का निर्माण कर उन्हें पीछे ढकेल देना क्या लोकतंत्र के वास्तविक स्वरूप को प्राप्त कर सकेगा जो हमारी भारतीय स्वतंत्रता का मूल लक्ष्य था.

बड़े बड़े उद्योगों एवं ऊर्जा शक्तियों के प्रयोग की ओर एक बड़े भाग की संस्था का झुकाव है जिसमें केवल अर्थ और व्यापार की प्रवृत्ति का विकास निहित है. ऐसी स्थिति में देश में अशान्ति, भूखमरी, ऊँच नीच का भेद, पिछड़ेपन का दृष्टिकोण तथा अराजकता के वातावरण का सृजन संभव है जो आज नक्सल एवं भ्रष्टाचार तथा आतंकवाद के विशेषज्ञों से विशेषित है. यह कहावत है कि 'भरा है पेट तो संसार जगमगाता है, सताये भूख तो ईमान डगमगाता है' चरितार्थ हो रही है. मानव निर्माण एवं समाज तथा लोक निर्माण शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य होना ही देश के सर्वांगीण विकास का आधार होगा. ऐसी शिक्षा जो मनुष्य के लिए जीवनोपयोगी न होकर केवल एक पूंजीपति बनाने में सहयोगी हो अथवा उच्च प्रशासनिक अधिकारी का निर्माण करे, क्या भारतीय सोच के अनुरुप सही है. सुभाष चन्द्र बोस जैसा व्यक्तित्व आई.सी.एस. जैसी उपाधि कूड़ेदान में रखकर भारतीयों के लिए ऐसे बन्धुत्व एवं सेवा भाव का स्थायीभाव पैदा करने का प्रयास किया है जो मानवता के लिए अमर संदेश है. शान्ति एवं सद्भावना तथा अपनी कुशाग्र बुद्धि से अर्जित ज्ञान द्वारा व्यक्ति जब अपने को असहाय पाता है तथा कूटनीति, राजनीति, की कार्य प्रणाली को देखकर या तो अपने को असफल घोषित कर बैठ जाता है अथवा बाढ़ के अनियंत्रित जलधारा की भांति स्वच्छन्द होकर विनाश लीला में स्वयं को जोड़ लेता है किन्तु इस सब का प्रभाव देश की गरिमा एवं अशिक्षा पर कलंक के रूप में सामने आता है.

इन सब बातों के अतिरिक्त भी अनेक स्तर के कुत्सित प्रयास शिक्षा जगत में व्याप्त होते जा रहे हैं जो इसे प्रभावहीन प्रदर्षित कर रहे हैं. अतः ऐसी परिस्थिति में पूरे देश का शिक्षा स्तर उसकी क्षेत्रीय व्यवस्थानुसार एक स्तर का होना चाहिए. एक ही वय वर्ग के बच्चे के लिए एक समान पाठ्यचर्या एवं नियमों की परिधि में व्यवस्था होनी चाहिए. देश के सांस्कृतिक परिवेश को भी शैक्षिक व्यवस्था में प्रभावी बनाया जाना चाहिए जिसका शुभारंभ अत्यन्त पिछड़े इलाके एवं गांव के स्तर से होना चाहिए. भले ही उसका लक्ष्य वर्तमान की सर्वोच्च विकास की परिधि ही क्यों न हों? देश के अतीत एवं वर्तमान तथा परतंत्रता एवं स्वतंत्रता के बीच के अन्तर को सभी की ज्ञान शक्ति के अन्तर्गत होना चाहिए और उसके परिमार्जन एवं रेचन हेतु नवीन सोच

जागृत करने का प्रयास होना चाहिए. बाल अधिकारों का विकास पूरे देश में एक समान सीमा के अन्तर्गत होना चाहिए. शिक्षा व्यवस्था अर्थ केन्द्रित एवं आय का स्रोत न होकर ज्ञान केन्द्रित तथा मानवीय मूल्यों के सम्बर्द्धन पर केन्द्रित होनी चाहिए. ज्ञान का आधार अन्वेशण तथा क्रियाशीलता से जिसमें सभी स्तर के लोगों एवं बच्चों की सहभागिता हो. अनुशासन, कड़ी मेहनत, दृढ़ आस्था, ज्ञानार्जन के प्रति जिज्ञासा तथा आवश्यक संसाधनों तक यांत्रिकी का प्रयोग करने हेतु भारतीय वेदों, पुराणों तथा प्रेरणाप्रद साहित्यों के अनुशीलन पर भी ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकताा है. यहां के उन आदर्शो को जिनके द्वारा भारत की ख्याति अनेक रूपों में विश्व के क्षितिज पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ी है उसका विधिवत ज्ञान जो भी सहायक माध्यम हो सकें, उनके सहारे देश के कोने कोने में स्थापित किये जाने चाहिए. बुद्धि, मन और आत्मा में अन्तसम्बन्ध स्थापित करने में, यहां की प्रकृति, शैली और दिव्य शक्तियों के माध्यम से विवेकपूर्ण आचरण की आवश्यकता है. कर्म योग, पंचशील, और प्रत्येक तन व मन में ईश्वर का निवास और बड़े भाग का मानुष तन पावा, सुर, नर मुनि, दुर्लभ सन गावा' का भाव जागृत कर भारतीय संस्कृति व इतिहास के पृष्ठों के अमर सूत्रों से विकास की नवीनधारा एवं दौड़ में सहभागिता हेतु शिक्षा के अनेक रूपों की आवश्यकता है जिसमें शिक्षा विदों एवं साहित्यकारों, समाज के प्रत्येक बुद्धिजीवी तथा शिक्षकों की अहं भूमिका अपेक्षित है.

दिए गए समय में खुद बंद होगा कम्प्यूटर

कंम्प्यूटर पर काम करते-करते कई बार ऐसी इमरजेंसी आती है कि हमें उसे तुरंत शट डाउन करना होता है. लेकिन कंम्प्यूटर पर डाउनलोड हो रहे डाटा की वजह से हम ऐसा तब तक नहीं कर सकते जब तक डाउनलोडिंग पूरी न हो जाए. अगर आप अक्सर इस परेशानी से गुजरते हैं तो आपके लिए एक समाधान है. आप अपने कम्प्यूंटर या लैपटाप को इस तरह से प्रोगाम कर सकते हैं कि एक तय समय के अंदर वह आसानी से शट डाउन हो जाए. इसके लिए आपको http://www.chameleonmanagers.com पर क्लिक करके इस सॉफ्टवेयर को यहां से डाउनलोड करना होगा.

एक बार वह सॉफ्टवेयर आपके सिस्टम पर डाउनलोड हो गया तो आपको शट डाउन, स्लीप, हाइबरनेट और लॉग ऑफ के विकल्प दिखेंगें. इसके बाद आप वह समय लिखकर एंटर कीजिए, जिसके आसपास आपको लगता है कि आपका काम खत्म हो जाएगा. आप एक निश्चित समय भी लिख सकते हैं या फिर दिए गए विकल्पों में से किसी समय का विकल्प चुन सकते हैं. इस तरह से आपका कम्प्यूटर या लैपटॉप इस बात के लिए प्रोग्राम हो जाएगा कि जो समय आपने एंटर किया है. उस समय में वह बंद यानी शट डाउन हो जाए. यह साफ्टवेयर केवल विडोंज को सर्पोट करता है.

पृष्ठ १० का शेष.... हिन्दीः कल, आज ....

भारत का राजभाषा किसी अधिकारिक भाषा के बिना चल रहा है क्योंकि जो अधिकारिक भाषा घोषित है उसमें काम नहीं होता है और जिसमें काम होता है वह अधिकारिक राजभाषा घोषित नहीं है. यह बड़ी विचित्र स्थिति है. राजभाषा के रुप में हिन्दी को भले ही मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा हो किन्तु एक सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का दिन-प्रतिदिन विकास हो रहा है. भाषा के नाम पर हमारे प्रदेशों का पुनर्निर्माण हुआ लेकिन उनका शासन उनकी भाषा में नहीं, अंग्रेजी के माध्यम से चल रहा है. आज जितने भी राजनैतिक दल हैं, जो आज शासन में हैं, या कल शासन में आने वाले हैं, या कल शासन में आने वाले हैं, सबके सब अंग्रेजी के गुलाम हैं. उनमें हिन्दी भाषा का प्रेम नाम मात्र का ही रह गया है। देश को बचाना है तो नयी राजनैतिक सोच और आचार-व्यवहार पैदा करना होगा. उनको पहली सीढ़ी के रुप में हिन्दी भाषा आंदोलन आरंभ करना होगा और यह काम देश के प्रबुद्ध, विवेकशील और स्वाभिमानी लोग ही शुरु कर सकते हैं.

जिस हिन्दी को सूर, कबीर, तुलसी, निराला और जायसी जैसे कवि मिलें हो उस हिन्दी को कौन मिटा सकता है। हिन्दी न कभी मिटी है, न कभी मिटेगी।

बचपन छीनते ये आधुनिक प्ले स्कूल

शिक्षा सचमुच व्यापार बन चुकी है. परचून की दुकानों की तरह शिक्षण संस्थान खुल रहे हैं. इनमें अंग्रेजी स्कूलों का बोलबाला है. अधिकांश निजी स्कूल अर्थ केन्द्रित हैं. प्री स्कूलों में प्रवेश की उम्र दो+है. स्कूल तो सच मानिये एक दुकान है. बच्चा रोता है- 'मुझे स्कूल नहीं जाना, पर उसे फिर फुसलाकर भेज दिया जाता है. कई दिनों ऐसा ही चलता रहता है. बच्ची तनाव में है, पर स्टेटस का सवाल है.

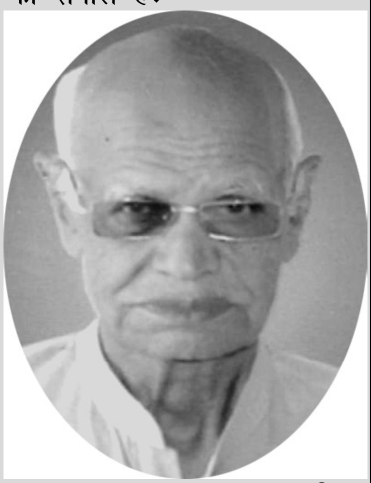

✍ मुखाराम माकड़ 'माहिर'
विश्वकर्मा विद्या निकेतन, रावतसर-३३५५२४, राजस्थान

गत दशक में शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण की बाढ़-सी आ गई है. आज प्रत्येक स्तर की शिक्षा सचमुच व्यापार बन चुकी है. सम्पन्न लोग शिक्षा के क्षेत्र में खुलकर निवेश कर रहे हैं. गली-गली में परचून की दुकानों की तरह भांति-भांति के विद्यालय, महाविद्यालय व तकनीकी शिक्षण संस्थान खुलते ही जा रहे हैं. इन शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा समितियों एवं लोकहितैशी ट्रस्टों द्वारा संचालित अनेक संस्थायें उच्चकोटि की भी है तथा अच्छा कार्य रह रही हैं. हिन्दी माध्यम के विद्यालयों या संस्कृत के विद्यालयों की दशा पतली है, किन्तु अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों का बोलबाला है. बस्तों का बोझ बढ़ता ही जा रहा है. सरकारी विद्यालयों के आचार्य, प्राचार्य भी उच्च पदासीन अधिकारियों तथा उच्च वर्ग की भांति अपने बच्चों को नामी निजी स्कूलों में भर्ती करवाते हैं. सचमुच महंगे अंग्रेजी स्कूलों में प्रवेश दिलाना एक सामाजिक रुतबा बन चुका है. भारी भरकम प्रवेश शुल्क, वाहन शुल्क, शिक्षण शुल्क, परीक्षा शुल्क, विकास शुल्क आदि चुकाना आम आदमी के वश की बात नहीं है. ये वर्दी, पाठ्य पुस्तकें आदि सभी सामग्री व्यवस्थापक द्वारा निर्धारित तिथि को फीस नहीं भरी तो प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क भी चुकाना पड़ता है. होमवर्क करवाना भी अभिभावक की ही जिम्मेदारी होती है. अतः इस हेतु प्राइवेट ट्यूटर भी रखने पड़ते हैं. निष्कर्ष यह है कि अधिकांश निजी स्कूल बाल केन्द्रित नहीं है बल्कि अर्थ केन्द्रित हैं. इन विद्यालयों में शिक्षा के अधिकार के कानून के तहत पच्चीस प्रतिशत निर्धन छात्रों को प्रवेश देना अनिवार्य है पर इसकी शत प्रतिशत अनुपालन नहीं हो रहा है. यदि उच्च तकनीकी संस्थानों की बात करें तो साधारण दर्जे के विद्यार्थी को भी प्रवेश मिल जाता है वशर्ते कि वह चंदे की मोटी रकम देने की क्षमता रखता हो.

प्रत्येक स्तर की शिक्षा का ब्यौरा देना इस लेख में संभव नहीं. अतः अब हम केवल अंग्रेजी माध्यम के प्री-स्कूलों, प्ले स्कूलों या बिना बस्ते के स्कूलों की चर्चा करेंगें. पहले महानगरों में ही ऐसे स्कूल थे किन्तु आज छोटे बड़े कस्बों में भी ऐसे विद्यालय खुलते ही जा रहे हैं. प्रवेश काल में इन विद्यालयों के आकर्षक रंगीन इश्तिहारों की भरमार रहती है. विज्ञापनों में अनेक सुविधाओं का सचित्र उल्लेख रहता है. इन प्री स्कूलों में प्रवेश की उम्र दो+ है. जरा सोचिये दो-अढ़ाई साल का दुध मुंहा बच्चा वहां जा कर क्या करेगा? स्कूल तो सच मानिये एक दुकान है पर माता-पिता इन बच्चों को भेजने के लिए क्यों लालायित है? यह बात समझ से बाहर है. उदाहरणार्थ शिक्षित माता-पिता अढ़ाई साल की एक बच्ची को ऐसे स्कूल मे प्रवेश दिलाते हैं. पहले ही दिन रोती सिसकती उस बच्ची को विद्यालय से सूचना मिलने पर वापिस लाना पड़ता है. अगले दिन बच्ची बार-बार अपनी दादी से कहती है- 'मुझे स्कूल नहीं जाना, पर उसे फिर फुसलाकर भेज दिया जाता है. कई दिनों ऐसा ही चलता रहता है. बच्ची तनाव में है, उदास है पर स्टेटस का सवाल है. उसके कोमल मस्तिष्क पर पड़ने वाले कुप्रभाव के बारे में किसी को भी चिन्ता नहीं है. यह दृश्य मैंने स्वयं देखा है तथा अभिभावकों को सलाह भी दी पर

उन्होंने एक शिक्षाविद की इन नेक सलाह को नही माना. भारी भरकम फीस चुकाकर बच्चों को वात्सल्य से वंचित करना, उनकी मासूम मुस्कानें छीनना कहां का न्याय है?

इन स्कूलों के चमकीले, रंग-बिरंगे खिलौनों व अनेक आकर्षक वस्तुओं से सजे-धजे कमरों में अंग्रेजी तहजीब के तौर-तरीके, बोल-चाल रहन-सहन सिखाये जाता हैं. बालक अपनी मातृभाषा की सहजता एवं सरसता से कट जाता है. माता-पिता, चाचा-चाची, दादा-दादी आदि के मधुर स्नेह से वंचित हीं नहीं होता बल्कि वह अपने पारस्परिक संस्कारों एवं संस्कृति से भी महरूम रह जाता है. वस्तुतः ये प्ले स्कूल एक आधुनिक लाभप्रद कारखाने के समान ही हैं. जहां निध ाीरित सांचे में ढले उत्पाद की भांति बालक को एक कृत्रिम सांचे में ढालने का भरपूर प्रयास किया जाता है.

बच्चा तो विकसित होना चाहिये प्राकृतिक वाटिका के सुन्दर फूल की भांति-पूर्णतः शांत, आनन्ददायक एवं स्वस्थ परिवेश में. 'होनहार विरवान के होत चीकने पात' यह कहावत सार्थक है. यदि बालक होनहार है तो उसे उसकी इन्द्रियों को सुविकसित होने के उपरान्त पांच वर्ष की आयु में विद्यालय में प्रवेश दिया जाये तो वह बड़ी तेजी से प्रगति करेगा. वह आत्म निर्भर होगा. किन्तु इस प्री स्कूलों ने एक पूर्ण बालक या फिर चुस्त बालक की छवि एक ब्रांड की तरह शिक्षा के बाजार में बड़ी चतुराई से उतारी है और फलस्वरुप आज मध्यमवर्गीय परिवार भी भारी खर्चा उठाकर इस अंधी होड़ में शामिल हो रहे है. सचमुच सत्ता की भाषा, सत्ता तक पहुंचने के लिये जैसा व्यक्तित्व चाहिये इन सबको अभिभावक एक घुट्टी की तरह मासूम बच्चों को पिलाना चाहते हैं, कितनी भारी भूल है यह?

महर्षि अरविन्द के मतानुसार आप बालक को कुछ भी नहीं सिखा सकते. आप अपनी अपेक्षा उस पर नहीं थोप सकते क्योकि प्रत्येक बालक की क्षमता, कुछ होने की क्षमता उसकी स्वयं की होती है. यदि आप उस पर अपनी इच्छा थोपेंगे तो सफलता हाथ नहीं लगने वाली. सचमुच बदलते समाज ने और नई संस्कृति के विकास ने बचपन को अत्यन्त जटिल एवं कष्टदायक बना दिया है. प्रकृति से जुड़े रंग, पक्षियों का कलरव, बड़ों का स्नेह, बालसुलभ मनोहारी क्रीड़ाये आज बचपन से गायब होते जा रहे हैं. इस प्रकार बालकों के स्व को समाप्त करने की यह प्रक्रिया जोर-शोर से जारी है. हमारे भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा प्रणाली इसकी कतई अनुमति नहीं देती.

निष्कर्ष यह है कि आज ये आधुनिक प्ले स्कूल एक बड़े लाभकारी व्यवसाय के रूप में विकसित हो चुके हैं और ये बच्चों को एक पूर्व निर्धारित ढांचे में ढले उत्पाद की तरह प्रतियोगिता के बाजार में उतार रहे हैं. इस प्रकार शिक्षा का यह बाज़ार बच्चे को महज ग्राहक मानने लगा है और उद्देश्य है खूब धनार्जन. इस बाजार में निशाने पर मां-बाप का पैसा ही नहीं है, वरन् खुद बचपन है. खेद है कि अभिभावक स्वयं इस शोषण चक्र के सक्रिय पुर्जे बन गये हैं.

शिक्षा का उद्देश्य तो बालक को एक सुसभ्य, संवेदनशील, सदाचारी, हर तरह से सक्षम एक आदर्श व्यक्तित्व से सम्पन्न इन्सान बनाना है. हमारी वैदिक संस्कृति तो कहती है-पंच वर्षाणि लाडयेत्' अर्थात पांच वर्ष तक बालक पारिवारिक स्नेह की छत्र छाया में विकसित होना चाहिये क्योंकि माता-पिता ही उसके प्रथम गुरु है. अतः आवश्यकता है आज शिक्षा को इस भौड़े बाज़ारवाद से मुक्त करने की यदि ऐसा नहीं किया गया तो शिक्षा का अधिकार मात्र एक घोषणा भर रह जायेगा. निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का सपना सपना ही रह जायेगा.

विद्या के बाजार में,
बड़ों बड़ों की होड़,
मम्मी पापा रेस में,
विकट दाखिला दौड़।
विकट दाखिला दौड़,
फिरंगी स्कूल दमकते,
पैसों की बरसात,
कागजी फूल चमकते।
माहिर म्यूजिक पाप,
पांव थिरकें आद्या के,
हिन्दी गीत फ्लाप,
सदन बिकते विद्या के।

जनसंदेश

यदि केन्द्रीय सरकार/सरकारी बैंक/केन्द्रीय सरकार के उपक्रम का कोई भी अधिकारी घूस माँगे तो फोन करें:-एस.पी. सीबीआई, लखनऊ -0522-2201459, 2622985 और एस.एम.एस 9415012635

खश्बू बनो फूल नहीं: दाऊजी

इमा या गावः स जनास इन्द्र।।

ऋग्वेद ६/२८/५

जो पुरुष गौ को ठोकर मारत ा है और सूर्य की ओर मुख करके मुत्रोत्सर्ग करताा है, ऐसे मनुष्य को मैं जड़-मूल से नष्ट करता हूं.

डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एक निराला व्यक्तित्व

द्विवेदी रूपी साहित्यिक हीरा मिलना बहुत कठिन है.

-आर.मुत्थुस्वामी
भिलाई, दुर्ग, छ.ग., मो०: ९६२६११०७२६

तू है एक निराला,
तू है दुनिया का उजाला,
तेरे कमल चरणों में मेरा वन्दन,
तेरी सेवा को मेरा अभिनन्दन,
अभिनन्दन!

डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी की बहुमुखी प्रतिभा का मैं सम्मान करता हूं. उनके शरीर में हिन्दी की आत्मा है इसलिए हिन्दी की अपार सेवा वे करते आ रहे हैं. वर्तमान परिस्थिति में तन, मन एवं धन से इतनी सेवा करना बहुत ही कठिन काम है. ऐसा श्रेष्ठ गुण अन्य साहित्यकारों में हम नहीं पा रहे है. उनकी हिन्दी सेवा वन्दनीय एवं प्रशंसनीय है. आपके साहित्य दियों की तरह जगमगाते रहें. ऐसा हिन्दी प्रेमी हमारे देश मे मिलना दुर्लभ है. आप राष्ट्रभाषा हिन्दी को समर्पित हैं. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के वार्षिक आयोजन साहित्य मेले में हर वर्ष देश के विभिन्न साहित्यकारों को इलाहाबाद के पवित्र मंच पर एक साथ आमंत्रित कर उन्हें सम्मानित करना उतना आसान नहीं है, जितना हम समझते हैं. गत कई वर्षो से साहित्य मेले में उनसे मेरी मुलाकात होती रही है. इस मंच पर मेरी हिन्दी के लिए मुझे विभिन्न श्रेष्ठ सम्मान प्रदान कर विभिन्न साहित्यकारों के बीच में मुझे गौरान्वित किया है. इससे मेरा उत्साह बढ़ा तथा हिन्दी की सेवा 'काव्य सरिता साहित्य समिति' भिलाई, छ.ग. के अध्यक्ष पद पर रहकर सारे हिन्दुस्तान के विभिन्न हिन्दी मंचों पर हिन्दी में कविता पाठ अपनी धुन में करते आ रहा हूं. मंच देने वाला ही, साहित्यकार से श्रेष्ठ होता है. नहीं तो अहिन्दी भाषी हिन्दी कवि आर.मुत्थुस्वामी को कौन जानता? यह श्रेय निश्चय ही परम आदरणीय गोकुलेश्वर जी को जायेगा. हमें हीरा मिल सकता है लेकिन द्विवेदी रूपी साहित्यिक हीरा मिलना बहुत कठिन है. ऐसे महान साहित्यकार की लंबी आयु के लिए, ईश्वर से प्रार्थना करते हुए उन्हें और उनकी साहित्यत्यिक सफलता का मेरा आशीर्वाद एवं अनुग्रह.

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक के 10 वार्षिक सदस्य बनायें और 250/-रुपये की पुस्तकें उपहार में पायें.

10 सदस्यों के नाम व पते सहित रुपये 1100/मात्र की राशि धनादेश/ड्राफ्ट द्वारा भेजने का कष्ट करें।

संपादक
विश्व स्नेह समाज मासिक,
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.

परम सुख

- **मत बोलो**-यदि आप मीठा नहीं बोल सकते।
- **मत सुनो**-यदि आप अपनी एवं अपनों की बुराई/ओलाचना नहीं सुन सकते.
- **मत देखो**- यदि आप अच्छा एवं कटु सत्य नहीं देख सकते।
- **मत सोचो**-यदि आप भला एवं अच्छा नहीं सोच सकते।
- यथा सम्भव मौन रहें.
- आदेशात्मक भाषा से सदैव ही बचिये।
- प्रेम देकर प्रेम, शान्ति देकर शान्ति एवं मान देकर मान लें.

देखो भईया कह देत हों हंसियों मत...

☺फिल्म की शूटिंग चल रही थी. जंगल का दृश्य था. निर्देशक ने सीन समझाते हुए अभिनेता से कहा-देखो, यह चीता पलटकर तुम्हारी ओर झपटेगा, तुम्हें तुरंत जीप से कूदकर उससे भिड़ जाना है. समझ गए न.

'हां, मैं तो समझ गया,' अभिनेता ने मुस्कराते हुए कहा-पर क्या चीता समझ गया है कि उसे क्या करना है?

☺ स्कूल में अध्यापक ने राजी से पूछा-तुम बड़ी-बड़ी लड़ाइयों के बारे में कुछ बता सकती हो?

'नहीं.' राजी ने दृढता से उत्तर दिया.

'क्यों?' अध्यापक ने फिर पूछा, तो वह झिझकते हुए बोली-'मम्मी ने घर की बात बाहर कहने से मना किया है'

☺नानू-क्या तुमने भगवान को देखा है?

मानू-नहीं./नानू-तब तुम कैसे कह सकते हो कि जो चित्र तुमने बनाया है वह भगवान का ही है?

मानू-तुमने भगवान को देखा है?

नानू-नहीं

मानू-तब तुम कैसे कह सकते हो कि यह भगवान का चित्र नहीं है.

विश्व स्नेह समाज का अब सदस्यता शुल्क देना बिलकुल आसान

१. अपने आसपास ही विजया बैंक की किसी शाखा में जाए, खातासंख्या 718200300000104 में अपनी सदस्यता राशि जमा करें,

२. एक पोस्टकार्ड पर जमा की तारीख लिखकर भेज दें यां vsnehsamaj@rediffmail.com पर ईमेल करें.

पत्रिका के प्रकाशन के तेरह वर्ष पूरे होने पर विशेष प्रस्ताव

सदस्यता ग्रहण करें और सदस्यता शुल्क के बराबर मूल्य की पुस्तकें मुफ्त प्राप्त करें

सदस्यता प्रपत्र

महोदय,

मैं विश्व स्नेह समाज का, एक साल, 5 साल, आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद/धनादेश/चेक/बैंक ड्राफ्ट/पे इन स्लिप द्वारा भेज रहा/रही हूं. कृपया मुझे 'विश्व स्नेह समाज' के अंक नियमित रूप से भिजवाते रहें.

1. बैंक ड्राफ्ट क्रमांक..................................दिनांक...........

बैंक का नाम...

2. धनादेश क्रमांक....................................दिनांक...........

हस्ताक्षर

नाम :..

पता :..

....

.....पिन कोड...........

दूरभाष/मो0..........................ईमेलः..............................

विशेष नियमः

01 नवीकरण हेतु शुल्क भेजते समय कृपया सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें, जो पत्रिका भेजते समय आवरण लिफाफे पर आपके नाम के ऊपर लिखा होता है.

02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें. उत्तर प्रदेश के बाहर के चेक भेजते समय बैंक शुल्क जोड़कर भेजें.

03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.

04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाएगा व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.

05 संरक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाएगा.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10/–	$ 1.00/
वार्षिक	रु0 110/–	$ 5.00/
पाँच वर्ष :	रु0 500/–	$ 150/
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/–	$ 350/
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/–	$ 1500/

विश्व स्नेह समाज(एक रचनात्मक क्रान्ति)

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011, उ.प्र. ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

पर्दा सिर्फ पर्दा है

पर्दा, सिर्फ पर्दा है
इसलिए कि
अन्दर सब कुछ
रहता बेपर्दा है।
आफिस-घर, होटल,
झोपड़ी या बांस का टट्टर
सभी पर पड़ा-परदा है।
रेशमी, चमकीले, फूलों वाले
खादी या फटी चादरें
सभी का बनता परदा है।
पर्दा तो आखिर पर्दा है
कभी गिरता, कभी उठता
कभी हिलता, मौज रह
अन्दर का भेद कहता है।
जीवन के रंग मंच का नाटक,
बेहूदा हो या मनोरंजक
दर्शनीय या गोपनीय
पर्दा सिर्फ करता पर्दा है
मूल्यांकन पर्दे का
सभ्यता, विकास, संस्कृति,
या खेल जीवन का,
इसी के परिप्रेक्ष में
फलता-फूलता है।
नाटक का समापन
पर्दा गिरता है।
बाद में एकत्रित भीड़
कुछ दूर चल,
विसर्जन,
भूतकाल पर परदा गिरता है।

-**कान्ति अय्यर**, हीलिंग हैन्ड हास्पीटल,
सिटीलाइट रोड, सूरत-३९५००७, गुजरात

जब हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है तो अधिकांश पत्रावली अंग्रेजी में क्यों? कहीं यह नौकरशाहों और नेताओं की एक गहरी साजिश तो नहीं। दाऊजी

घोंसला

-आचार्य पांडुरंग पराते
७४७, नागपुर-२४, महाराष्ट्र

जब घोंसला नहीं था,
घोसले की कीमत जान पड़ती थी।
पंछी ने घोसला बनाने की तरकीब बनाई
पेट काटकर, अथक परिश्रम करके,
बड़ी मुश्किल से दोनों ने घोसला बनाया।।१
घोसले में पंछी के चार छोटे-छोटे बच्चे रहते थे,
पंछी बच्चों के मुंह में निवाला दिया करता था।
बड़े प्यार से उन्हें अपनी बाहों में समेट लेता था,
सोचा था सब मिलकर साथ रहेंगे।।२
बच्चे देखते ही देखते बड़े हो गये,
घोंसले को छोड़कर चले गये,
अब घोंसले में दोनों बुढ़े पंछी रहते है
बच्चों की याद आते ही आंसू बहा लेते हैं।।३

बच्चों की मां मन बहलाने,
इधर उधर चली जाती है
बेचारा पिता घोंसले को देखकर,
दो चार आंसू बहा लेता है।।४
दिन तो कट जाता है,
रात विरानी सी लगती है।
संध्या समय जब घोसले में आता है,
वही उदासी नजर आती है।।५
बेटी जब पास थी कोई चिन्ता नहीं थी,
अब दूर है चिन्ता सी बनी रहती है,
अब घोसला घोंसला ही रह गया है,
केवल यादगार सीस बाकी है।।६

बेटी

-जे.वी.नागरत्नमा
बेलगांव, बड़गांव, कर्नाटक

बेटी घर की, पुष्प के समान है,
घर में बेटी है तो त्योहार का आनंद
भगवान का वर है पुत्री फुलवारी है
बेटी नहीं तो मुस्कान नहीं
सावन और दीवाली के आनंद जैसे बेटी
बेटी अमूल्य धन के समान है
माता पिता को देखभाल करती है
विदा करेंगे पति के घर प्यार से
विवाह का बंधन अनुराग संगम है।
कंगन, हार गहनों को पहनकर
लजाती हुई जाते समय मन भर आता है
लोग आनंदित होते है
बेटी का यौवन श्रृंगार काव्य है।

मातृ भाषा हिन्दी

हिन्दी है हम सब की बोली,
इसका सब सम्मान करो।
अपने भारत में इसका,
अपमान न हो यह ध्यान करो।
प्रयोग करे इसका हम हरदम,
मातृभाषा हैं ये प्यारी।
बोले पढ़े लिखें हिन्दी में,
राष्ट्रभाषा है ये हमारी।
साहित्य इसका ज्ञान भरा है,
पढ़ कर सब विद्वान बनो।
हिन्दी है अपनी बोली,
इसका सब सम्मान करो।

-**सुरेखा शर्मा,** गुड़गांव, हरियाणा

प्रियवर! याद तुम्हारी आती

पीड़ा सी उठती है मन में,
जब याद तुम्हारी आती।
फिर गीत तुम्हारे प्रियवर,
धड़कन भी मेरी गाती।।
मैं तुम्हें चाँद में देखूं,
वह भी धोखा कर जाता।
मैं कहाँ कहाँ खो जाऊँ,
मन पीड़ा से भर आता।
यह एक निराशा पल पल,
नागिन सी डस-डस जाती।।
पीड़ा सी........
आहट सी होती मन में,
मन दौड़ द्वार पर जाए।
बस सूनापन ही सम्मुख,
मुझसे आकर टकराए।
शायद वे आते होंगे,
दीपों से द्वार सजाती।।
पीड़ा सी...............
जब कभी निहारूँ दर्पन,
लज्जा से झुक झुक जाऊँ।
खुद में ही तुमको पाकर,
मैं मन ही मन मुस्काऊँ।।
लेकिन जब आँजू काजल,
नयनों में बदरी छाती
पीड़ा सी......

-**रामआसरे गोयल,** सिम्भावली, हरियाणा

नयन से हृदय लगा बहने

प्रीत कर ली,
पतझरों से
आज हमने।
देख लो
मधुमास कैसे
अब लगा जलने,
जीर्ण तन सी
हिल रही हैं,
वृक्ष की शाखें,
देखती हैं
दीनता से,
फाड़ कर आंखें,
मूक हैं पर
नयन से
हृदय लगा बहने।
आज फिर
कलियां यहां
मुरझा रहीं,
वृक्ष से
कांटों के लग
कुछ कह रही।
क्यों सुबह
आई थी बस
मुस्कान को छलने।

-**पंकज मिश्र'अटल'**,शाहजहांपुर,उ.प्र.

वस्तुस्थिति

उपवन के आंगन से
पुष्प सभी लापता है
बसन्त के मौसम में भी
घुटन है
चुप्पी है
सन्नाटा है।
अच्छी पैदाईश से उत्साहित
धरती पर पापों की खेती करना
अब सबको बेहद सार्थक लगने लगा है,
हवा और प्रदूषण की
मित्रता हो गई है।
बादलों ने सूखे से
समझौता कर लिया है।
कुछ अनुबन्धित शर्तो पर
साप और नेवला एक हो गए है।
सत्य निर्वासति है
भ्रष्टाचार पल्वित-पुष्पित है।
धर्म पाखण्डी गुरूओं की शरण में जाकर
सुविधाभोगी हो गया है।
कर्म चालाकी का पर्याय बन गया है
निष्ठाएं अवसरवादी
और आस्थाएं पलायनवादी बन गई है।
श्रेय निर्वासित,
प्रेय चर्चित है,
भीष्म का पराक्रम
शिखण्डियों को समर्पित है।

-**आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य'**, मण्डी, हि.प्र.

लोरी

कहां गई लोरी,
प्यार की डोरी।
झूला झुलाती थी,
प्यारी नींद आती थी।

यातायात

कुछ हट कर करें
इसी में दम है
उड़ कर ओवरटेक करें
यह भी कम है।

चीटिंग

मीटिंग का विषय
स्वास्थ्य हेतु डायटिंग
सदस्यों ने किया
मीटिंग में ओवर ईटिंग।

-**डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा**, ग्वालियर, म.प्र.

दूध हो रहा चोरी

लल्ला लल्ला लोरी, दूध हो रहा चोरी
दूध-बताशा के चक्कर में, पनप रही लतखोरी.
भला आदमी हरदम हारे, जीते जबर टपोरी
जनता करती पहरेदारी, वो करता है चोरी।
जनता ढूंढे राशन-पानी, वह ले भागा बोरी
गटक रहा है दूध-बताशा, जनता के हाथ कटोरी
जनता किस्मत जेब नहीं, स्विस-बैंक करे गंठजोरी।
विपदा राहत कोष से भी, उसकी भर रही तिजोरी
राजनीति हुई कामधेनु अब, विचरे खोरन-खोरी
'राजगुरू' रट राम राम, तू मतकर चुग्गलखोरी।।
...लल्ला लल्ला लोरी.............

नियमित मंजन करिये

पीड़ा दाँतों में हुई, भालू हुआ उदास।
दवा कराने को गया, हाथी जी के पास।।
हाथी जी के पास, दाँत की जाँच कराया।
हाथी ने दी दवा, और उसको समझाया।।
नियमित मंजन करो, दाँत में लगे न कीड़ा।
साफ रखो 'राजगुरू' न हो दांतों में पीड़ा।।

—आचार्य शिव प्रसाद राजभर 'राजगुरू',
जबलपुर, म.प्र.

सौगात

सैर सपाटे की ही बात दोहराता हूं
क्या क्या ले आता हूं सौगात सुनाता हूं
झूमती लताओं से अदायें ले आता हूं
पुष्पों के केशर से खुशबू ले आता हूं
कलियों के किसलय से मुस्कान लाता हूं
शबनम की साारी नमी लूट लाता हूं
क्या-क्या ले आता हूं सौगात सुनाता हूं
सैर सपाटे की ही बात दोहराता हूं।१
परिन्दों के प्यार से दुलार ले आता हूं
सुर कण्ठ से उनके सरगम ले आता हूं
रंगो से उनके हर रंग ले आता हूं
यह सब मिला कर जीवन संवारता हूं
सैर सपाटे की ही बात दोहराता हूं।२
सुबह पहली किरणों का तेज ले आता हूं
बादलों से उनकी छटायें मांग लाता हूं
नील गगन से सहन शीलता ले आता हूं
ऋतुओं में छाई बहार को ले आता हूं
सैर सपाटे की ही बात दोहराता हूं।३
प्रातः काल की बयार ले आता हूं
कुदरती ऊर्जा मन भर ले आता हूं
उन्नति अवनति की चर्चा कर आता हूं
जीवन को अपने शालीन बनाता हूं।
सैर सपाटे की ही बात दोहराता हूं।

-रामकेवल, सीएटीसी, बमरौली, इलाहाबाद

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

१. प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
२. बिक्री की व्यवस्था
३. प्रचार—प्रसार की व्यवस्था
४. विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-211011
bs&esy% sahityaseva@rediffmail.com

आवश्यकता है

हिन्दी साप्ताहिक **का बा चर्चा**

हेतु विभिन्न शहरों में संवाददाताओं, विज्ञापन प्रतिनिधियों, शहर/तहसील/जिला व राज्य स्तर पर ब्यूरो प्रमुख की.

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।
10 रीवा बिल्डिंग, लीडर रोड इलाहाबाद-211001
मोबाईल: 9935396715, 9335155949

चित भी अपनी .....अपनी!

-जी.सी.भट्टाचार्य
काशी हिन्दी विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ.प्र.

गर्मी के दिन थे. एक अंग्रेजी के प्रसिद्ध स्कूल में मेरा भतीजा चंचल कक्षा ८ में बादल के साथ पढ़ा करता था. उन दिनों जब ३ बजे उसके विद्यालय में छुट्टी होती थी तो मैं उन दोनों को लेकर बादल को उसके घर छोड़ते हुए स्कूटर से अपने घर पर सीधे वापस आ जाया करता था. स्कूल की सभी कक्षाओं में सेण्ट्रल एसी था लेकिन रास्ते में आते-आते हम पसीने से नहा गए थे उस दिन भी. अतः पसीने से भीगें हुए कपड़े को एक-एक करके निकाल लेने के बाद चंचल को ले जाकर नहलाना, कीमती प्रसाधन कर पाउडर वगैरह लगाना और फिर उसे गोद में बैठाकर नाश्ता करवाना मेरा रोज का काम था. तब तक उसके साथ खेलने के लिए तैयार होकर घर से बादल भी आ जाया करता था. उसी दिन मैंने चंचल के बड़े बड़े नेत्र पल्लवों में जरा काज़ल और अतिसुन्दर चेहरे पर चन्दन की बिन्दियां भी लगा दिया तो उसकी चेहरे की सुन्दरता में चार चांद लग गए. उसकी दूधिया त्वचा पर चन्दन ही कुछ पीलापन लिए हुए लग रहा था. देखते ही प्यार करने का मन तो करने लगा मुझे लेकिन वह भूखा था इसलिए बिना देर किए उस १४ वर्षीय बालक को गोंद में लिए ही उसे नाश्ता करवाने में लग गया. चंचल ने भी मुझे खिलाना शुरू कर दिया. हम दोनों कभी अकेले में नहीं खाते थे. चंचल के बिना खाने में मेरा मन नहीं लगता तो क्या करें' लेकिन भाग्य खराब था. कॉल बेल बजने लगा गेट पर. सुनते ही चंचल ने मुस्करा दिया और मैं अपने माथे पर कराघात कर लिया-'मर गए, क्या लोग है? और कभी आने का समय नहीं मिला. नाश्ता तक करने नहीं देते किसी को. छिः....' सुनते ही चंचल खिलखिलाकर हंसने लगा. नाश्तो तो करना दूर, मेरे लिए एक मिनट चंचल को जरा प्यार तक कर पाना दूभर लगने लगा. उध ार काल बेल थी कि बजती ही चली जा रही थी लगातार. अतः हारकर परियों के देश के राजकुमार चंचल को

> दरवाजे पर घंटी की आवाज सुनकर गेट खोलना पड़ा. एक कवि मित्र खड़े थे. 'अरे, सो रहे थे, तुम क्या, इस समय.. ..' मैं जानता था कि वे बड़े ही पिछलग्गू टाइप के थे. कवि मित्र अपनी कविता की एक दो पंक्तियां सुनाते और उसकी व्याख्या करने लग जाते स्वयं ही.

लेकर मुझे बगल के कमरे में जाना पड़ा और जल्दी से उसे कीमती अर्न्तवास मात्र पहनाकर अकेले ही नाश्ते के लिए बैठाकर दरवाजे को बन्द करना पड़ा और भागकर गेट खोलना पड़ा. एक कवि मित्र गेट पर खड़े थे. हंसते हुए बेल की स्विच को दबाए हुए.' अरे, सो रहे थे, तुम क्या, इस समय.... और क्या-क्या वे कहते चले गये, मैं ठीक से सुन भी नहीं पाया. उन्हें देखते ही मेरे दिमाग का पारा और चढ़ जो गया था. मैं जानता था कि वे बड़े ही पिछलग्गू टाइप के थे. महाशय एक ही बात को कम से कम १० बार दोहराया करते थे और सामने वाले का पीछा किसी भी तरह से जैसे न छोड़ने का ठेका ही लेकर वे पैदा हुए थे. अब जो भी हो, पहली बार घर पर आए थे तो मना भी करता तो कैसे, अपना नाश्ता भले कर नहीं पाया मैं लेकिन उन्हें ले जाकर सादर बैठाना पड़ा और चाय भी बनाकर बिस्किट के साथ लाकर देना पड़ा. फिर क्या था, वे चालू हो गए. गप्पबाजी में मेरा समय बरबाद होने लगा. मेज पर एक अधूरी कहानी और सम्पादक को लिखी हुई एक चिट्ठी पड़ी थी. सांस लेना होता तो कभी रुकते भी नहीं. मैं देखते ही देखते परेशान हो उठा. और भगवान का नाम लेने लगा मन ही मन. 'हे भगवान. ..कृपा करो. मुझे आज बचा लो. ' न कहने बनता और न कुछ सुनते. समय बीतने लगा. कुछ देर के बाद बादल का आगमन हुआ तो मैंने चैन की सांस ली लेकिन उन पर कोई प्रभाव ही जैसे न पड़ा हो. वे चालू रहे. बादल पहले कभी उसक आदमी को देखा तक न था. अति कुशाग्रबुद्धि का बादल कमरे में आया, सब कुछ देखा और सुना. बिना कुछ बोले चुपचाप बैठ गया और कवि महोदय की बातें सुनने लगा. कविवर थे कि अपनी कविता की एक दो पंक्तियां कभी सुनाते थे और उसकी व्याख्या करने में लग जाते थे स्वयं ही, जैसे हम काठ के उल्लू सब बैठे हों. जैसे वे कह रहे थे-'इन पंक्तियों में ग्रीष्मकालीन प्रकृति की अपूर्व शोभा का सकुशल वर्णन किया गया है. अब कोई दरवाजे, खिड़कियों को बन्द कर एसी कमरे में बैठा रहे तो भला कोई मूर्ख भी कैसे

उस प्राकृतिक सौन्दर्य का रसास्वादन कर सकता है, यही तो आधुनिकता का सबसे बड़ा अभिशाप है. बिजली नहीं तो इन्वर्टर लगाओ....नहीं तो जनरेटर चालू कर दो....प्राकृतिक तेल जले....संसाधान समाप्त हो जाय, वातावरण प्रदूषित हो जाय तो मेरी बला से. मुझे तो एसी का आनन्द चाहिए.' बादल इंतजार कर रहा था कि वे कब रूकें. एक सेकण्ड के उनके रुकते ही बादल ने मुझसे पूछा-'चाचाजी, यह क्या' इस कहानी को आपने अधूरी ही क्यों रख छोड़ा है.'

'अब समय ही नहीं मिल पाया लिखने का बेटा, तो क्या करें'

मेरे पत्र की ओर देखते हुए उसने कहा 'मिल भी कैसे सकता है, चाचाजी, वह तो आपकाा अपना हस्ताक्षर ही बता रहा है.'

बादल ने मुझसे पूछा-'चाचाजी, यह क्या' इस कहानी को आपने अधूरी ही क्यों रख छोड़ा है.'

'अब समय ही नहीं मिल पाया लिखने का बेटा, तो क्या करें'

'मिल भी कैसे सकता है, चाचाजी, वह तो आपका अपना हस्ताक्षर ही बता रहा है'

'क्या'

'यही कि आप एक अति सभ्य, भद्र, सुसंस्कृत और मितवाक् व्यक्ति है इसलिए किसी को रोक पान भी आपके बस की बात हो ही नहीं सकती.' इतना सुनते ही कविवर का मुंह खुला का खुला ही रह गया. अप्रत्यक्षरूप से 'वाचाल' की संज्ञा पाकर भी झेंप से गए. लेकिन तभी बोल पड़े-'तुम्हे हस्ताक्षर का विश्लेषण करना भी आता है क्या, बेटा.'

बादल ने गम्भीर मुद्रा में कहा-'हां'

यह कोई रहस्यभेद करने का काम तो था नहीं....बादल करना क्या चाहता है, मुझे तो यही समझ में नहीं आ रहा थी बात. ज्यादा सोचने का मौका मिला नहीं मुझे. कविवर ने जेब से पेन निकालते हुए कहा-'फिर तो जरा मेरे हस्ताक्षर का भी हाल बताओ ना बेटा....' और झट से मेरी कहानी वाले पेज पर ही अपने हस्ताक्षर कर दिए. बादल की भौंहे तनकर टेढ़ी हो उठी. अब मैं जानता था कि यह उसके बेहद नाराज होने का ही लक्षण है. मैं एकदम से घबड़ा गया. लेकिन बादल ने अपने क्रोध को छिपाकर संयतभाव से कहा-'क्या जानने चाहते हैं, अंकल.'

'अरे, कुछ भी कहो तो सही...जो तुम्हारे जैसे एक बच्चे की समझ में आए.'

'तो सुनिए. नाराज मत होना आप.'

'अरे, नहीं नहीं, बच्चों पर मैं कभी नाराज होता ही नहीं हाः हाः'

'पहला आप एक अति असभ्य, अशालीन और जल्दबाज व्यक्ति है.'

'क्या...क्या.' वे एकदम से चौक पड़े मेरे ही साथ. बादल निर्विकार था. शान्तभाव से कहा-'जी हां. अन्य किसी से भी पूछ लिजिएगा आप.'

'लेकिन यह सब भला कैसे पता लगा मेरी हस्ताक्षर देखते ही.'

'वह मात्र ऐसे कि आपको अपनी हस्ताक्षर करने के लिए अलग से एक पेपर तक मांगना जरूरी नहीं लगा और किसी के जरूरी काग़जात पर ही तुरन्त हस्ताक्षर करने लग गए. इतनी जल्दी पड़ी रहती है आपको हर समय. फिर यह तो कोई सभ्य संस्कार भी है नहीं ना....'

सुनकर उनका चेहरा फूलकर एकदम से कुप्पा सा हो गया लेकिन रहे चुप. बोलते क्या?

बादल कहां इतने में रुकने वाला था. तुरन्त कहा-'दूसरा-आप एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिनकी चित् भी अपनी होती है और पट् भी.'

'अब वह.....वह कैसे' वे हकलाने लगे सुनकर. बादल कठोर मुद्रा में कहा-'सभी जानते हैं यह सब. आप पहला अक्षर शायद प ही लिखे हैं लेकिन बिना ऊपर कोई लकीर खींचे ही. फिर आपने पेन को उल्टी तरह से भी घुमाने लगे हैं. बादल सच कह रहा था.

बादल ने कहा-'पहले भाग को यदि हम चित् मान लें. ऊपर से नीचे की लकीर तो उसके बाद ही तुरन्त जो भाग है. नीचे से ऊपर यानि कि ठीक विपरीत. यानि कि आप दूसरे को भूलकर भी कुछ कहने-बोलने का मौका तब देने वाले नहीं हैं. येन-केन-प्रकारेण फायदा आपको ही मिलनी चाहिए स्थिति जो भी हो. आप बातें सीधी भी करते हैं और परिस्थिति के बदलते ही बदलकर उलटी बातें कर हां में हां मिलाने लगते हैं.'

वे फिर से चुप्प. लेकिन इसबार उनका चेहरा तमतमा रहा था.

बादल बिना ध्यान दिए कहा-'तीसरा, राजा कोई भी हो रानी मन्दोदरी' वाली बात भी कुछ आपमें जरूर.'

'क्या मतलब है अब तुम्हारा.' वे बड़े क्रोध में पूछे. बादल ने कहा-'माफ कीजिए अंकल, और क्या हो पाता भला.' आप बिना बुलाए मेहमान बनने

शेष पृष्ठ ३० पर......

जीवन के उस पार

मनुष्य अपने भौतिक परिवार के पालन-पोषण, सुख सुविधाओं के संग्रह में यह भूल जाता है कि मृत्युपरान्त भी जीवन है, जहां उसे अकेला ही यापन करना है. मनुष्य मृत्युपरान्त ब्रम्हाण्ड की भूल भूलैया में भटकता रहता है. कर्मफल के रूप में यातनाएं भोगता है.

'ब्रम्ह वेद पुराण' जिसकी रचना सृष्टि से पूर्वही ब्रम्हा जी ने की थी. इसकी एक हस्तलिपि प्रति भूटान नरेश के संग्रहालय में उपलब्ध है. संसार में ऐसे दुर्लभ लोग हैं जो मृत्युबाद परलोक की यात्रा कर पुनः मानव मृत देह में वापस लौटे हैं? किसी भी मृत शरीर का 48 घंटे से पहले अन्तिम संस्कार नहीं करना चाहिए.

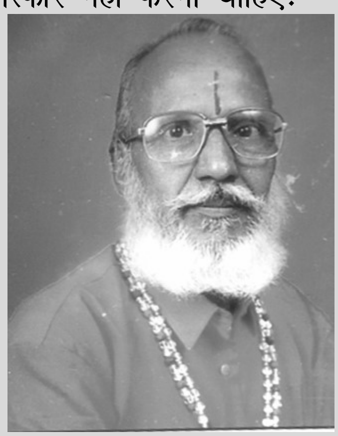

✍डॉ०अरुण कुमार आनंद
चन्दौसी, भीमनगर, उ.प्र.

भाग-०४

जीवन के बाद संसार कैसा होगा? यह एक अहम प्रश्न है? जहां मृत्युबाद हर प्राणी को जाना है? उस जहां की परिकल्पना कर पाना संभव नहीं है. अपने जीवन भर किये कर्मो पर चिंतन मनन करें तों पाते हैं कि हमने बहुत कुछ खोया है जिसकी भरपाई मृत्युपरान्त के संसार में संभव ही नही हैं. मनुष्य अपने भौतिक परिवार के पालन-पोषण, वैभव-ऐश्वर्य सुख सुविधाओं की वस्तुओं के संग्रह में यह भूल जाता है कि मृत्युपरान्त भी जीवन है, जहां उसे अकेला ही यापन करना और कर्मयोग करना है. जानते हुए भी वह पापकर्म में संलिप्त रहता है. का मुख्य कारण लोभ मोह अहंकार ही है. यद्यपि मनुष्य यह समझने लगे कि संसार में वह एकल ही है. सगा संबंधी परिवार कोई भी उसका अपना नही हैं. तो उसे किसी प्रकार का कष्ट होगा ही नहीं. इसे ही सदकर्म भाव कहा गया है. यही स्थिति परब्रम्ह परमेश्वर को प्राप्त करने का मार्ग है. जब मनुष्यों में ज्ञान की ज्योति प्रज्वल्लित हो जाती है तो सभी मार्ग उसके प्रकाश से दिखाई देने लगता है. मार्ग का अंधकार समाप्त हो जाता है. किंतु ज्ञान की प्राप्ति सद्गुरु के बिना संभव नहीं है. ऐसे लोग जो माया मोह लोभ अंहकार में लिप्त हैं वे संसार के ऐश्वर्य में उलझे उपार्जन के भंवर में डूबते उतरते रहते हैं. इसे ही भवसागर कहा गया है. भव सागर कहीं और नहीं है. इस भौतिक भवसागर से ही शायद ही कोई निकल पाता है. यह नहीं देखा कि मृत्योपरांत भी एक अद्भुत जहां है, जहां सबको एक दिन जाना है. जिसको कर्म मार्ग कहा जाता है. कर्म मार्ग के बिना भव सागर के पार जाना संभव नहीं है. इसीलिए मनुष्य मृत्युपरान्त ब्रम्हाण्ड की भूल भूलैया में भटकता रहता है. कर्मफल के रूप में यातनाएं भोगता है. मैं क्या साथ लेकर जा रहा हूं? कुछ भी तो नहीं, अपनी काया (शरीर) तक इसी भौतिक संसार में छोड़कर जाना है. फिर यह कर्म-अकर्म से अर्जित अकूत, धन-सम्पत्ति किसके लिए? सभी को जाना है अपने-अपने कर्म डोर से बंधकर केवल तनहा सूक्ष्म देह धारी आत्मा दिव्य लोक को जाने वाले मार्ग की तलाश में चौराहे पर खड़ी होकर अपने अतीत की विवेचना कर रही हैं. कुछ कर्म मनुष्य जीवन में किया नहीं तो अंधेरे मार्ग में प्रकाश कहां से आएगा? यहां मार्ग दिखाएगा कौन? क्या साईस मार्ग दिखाएगा? राजा हो या रंक साधु हो या संत योगी हो या भोगी. मृत्यु सभी की निश्चित है. फिर वह इस मृत्यु स्थिति को भूल क्यों जाताा है? यह जानते हुए भी कि यह लोक उसका घर नहीं हैं'

'यह जिन्दगी के मेले दुनिया में कम न होंगें. इक दिन पड़ेगा जाना-अफशोस की हम न होंगें? इस गीत के बोल हमें पिछले कुछ वर्षो से हृदय की धड़कन को बढ़ा रहे हैं तो हम सोचने बैठ जाते है, क्या होगा उन उपलब्धियों का? जो इस भौतिक संसार में अर्जित किया है? केवल कुछ समय के लिए सांसारिक यादें बन कर रह जायेंगे, तत्पश्चात दुनिया भूल जायेगी. क्या यही सबकुछ अर्जित करने के लिए आये थे संसार में, जिसे संसार में कोई नहीं जानता कि वास्तव में हम कौन है? जो सांसारिक नाम है वह तो मात्र छदम पहचान है. लेकिन आत्मा की जो वास्तविकता है वह तो इससे परे है, गुप्त है, केवल यमराज के रिकार्ड तक ही सीमित है. अन्यथा

एक नाम राशि के तो भौतिक संसार में करोड़ो लोग हैं. इसलिए 'मैं कौन हूं' यह मैं स्वयं भी नहीं जानता. कहावत है आत्मा का कोई नाम नहीं होता, मगर ऐसा नही है. यदि ऐसा होता तो यमदूत भी उलझ जाता. क्योंकि संसार में तो एक नाम के करोड़ो लोग हैं? यमदूत उनमें से किसे ले जाये? पहचान तो जरुरी है? जिसे यमदूत नाम से नहीं अपितु क्रमसंख्या से पहचानते हैं. यमराज के दरबार में प्रत्येक प्राणी की अलग पहचान उसके भौतिक नाम से नहीं बल्कि क्रम संख्या से होती है. इस क्रम संख्या का ज्ञान किसी भी जीव प्राणी को नही होता. जन्म लग्न कुंडली में जो लग्न होता है, उसके दशांम कोा आठ अंक से भाग करने पर मनुष्य का क्रमांक निकलता है. वही परलोक में उसकी पहचान है. उसी क्रम संख्या के गुणा भाग से जातक के नाम का ज्ञान होता है कि अमुक व्यक्ति का वास्तविक नाम क्या है. क्योंकि देवलोक में एक नाम का कोई दूसरा व्यक्ति नहीं होगा. इसी प्रकार समस्त पशु पक्षी कीट, पतंगों की भी अपनी अलग परलोकिक पहचान है. वैसे तो 'ब्रम्ह वेद पुराण' के अनुसार प्रत्येक जीव प्राणियों की आयु सीमा परमात्मा ने निर्धारित किया हुआ है. 'ब्रम्ह वेद पुराण' जिसकी रचना सृष्टि की रचना से पूर्व ही ब्रम्हा जीने की थी के अनुसार प्रत्येक मनुष्य की आयु 1001 वर्ष है. आज यह 'ब्रम्हवेद' ग्रंथ संसार में उपलब्ध नहीं है. इस ग्रंथ की एक हस्तलिपि प्रति भूटान नरेश तृतीय के संग्रहालय में उपलब्ध है. जिसमें सृष्टि की रचना से लेकर ब्रम्हाण्ड की रचना और समाप्ति तक का सविस्तार वर्णन किया गया है. देव लीपि में है. आज संसार में कोई भी ऐसा विद्वान नहीं है जो देवलीपि को पढ़ सकता हो? तात्पर्य यह कि आज प्रत्येक मनुष्य की आयु एक हजार एक सौ निन्नान्वे वर्ष है, किन्तु वह मनुष्य देह में केवल 100 वर्ष तक ही बमुश्किल जीवित रह पाता है? प्रश्न शेष आयु में वह सूक्ष्म देह धारी आत्मा के रूप में कर्मानुसार ब्रम्हाण्ड में ही विचरण करता है. मूल आयु पूर्ण होने तक वह विभिन्न रूपी आत्मा के रूप में मनुष्य योनि में किये अच्छे बूरे कर्मो का फल भोगते हैं. जो महापुरुष और पापी लोग होते हैं, उन्हें कीट पतंगों के नर्क योनि के कर्मफल भोगने के लिए जन्म दे दिया जाता है. संभवतः इसी स्थिति को शाास्त्रों में लख चौरासी कहा गया है. जिसमें भूत-पिचास जिन्हें चाण्डाल भी शामिल है. यहां संसारिक लोग हमसे यह प्रश्न जरूर करेंगे कि हमें मृत्योपरान्त के जीवन का ज्ञान कहां से और कैसे प्राप्त हुआ? यह एक बहुत कठिन और लम्बी प्रक्रिया है और भयंकर कठिन स्थिति से गुजरने के बाद ही ऐसा ज्ञान प्राप्त होता है. संसार में ऐसे दुर्लभ लोग हैं जो मृत्युबाद परलोक की यात्रा कर पूनः मानव मृत देह में वापस लौटे हैं? इसलिए किसी भी मृत शरीर का ४८ घंटे से पहले अन्तिम संस्कार नहीं करना चाहिए. प्रत्येक मनुष्य की आत्मा को सबसे पहले यमदूत या देवदूत पितृलोक में ले जाते हैं. पितृलोक यमराज का सचिवालय है. प्रत्येक मृत आत्मा यहां १३ दिन तक निवास करती है. यही उनके कर्मो का लेखा जोखा देखा जाताा है. तत्पश्चात ही उसे आगे भेजा जाता है. कर्मानुसार उसे स्वर्ग, परलोक, समलोक, नर्कलोक. पृतुलोक मृतआत्मा का प्रथम पड़ाव है. यही पर असंख्य मृत आत्माएं भूत पिचास जिन्ह, चाण्डाल और देवात्मा के रूप में 13 दिन तक विचरण करते रहते हैं. जो पूण्य आत्मायें है उन्हें देवात्माओं के रूप में स्थान प्राप्त होता है. जैसे सिद्ध साधु संत सूफी फकीर-निष्काम कर्म योगी को ही देवात्माओं का रूप प्राप्त होता है. कर्मनुसार पूनः मृत्युलोक में आने के बाद भी यह देवी देवताओं पीर पैगम्बरों के रूप में पूजे जाते हैं.

क्रमशः

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक के आगामी परिचर्चा का विषय

1—विचारों के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कहां तक जायज?

2-मंहगाई मूल कारण एवं निवारण

3-भारतीय पुलिस की संवेदनहीनताः कारण एवं निवारण

परिचर्चा हेतु अपने विचार अधिकतम 250 शब्दों में, एक फोटो के साथ क्रम संख्या 01, 02, व 03 के लिए क्रमशः 15 सितम्बर, 15 अक्टूबर, 15 नवम्बर 2013 तक मेल करें या भेजें। मेल हिन्दी क्रुति देव फान्ट में ही भेजें. अच्छे विचारों को उपहार प्रदान किया जाएगा.

उच्च रक्तचाप की दवाई

उच्च रक्तचाप की बीमारी ठीक करने के लिए घरेलू कुछ आयुर्वेदिक दवाइया. जैसे दालचीनी जो मसाले के रूप में उपयोग होता है वो आप पत्थर में पिस कर पावडर बनाके आधा चम्मच रोज सुबह खाली पेट गरम पानी के साथ खाइए. अगर थोड़ा खर्च कर सकते है तो दालचीनी को शहद के साथ लीजिये (आधा चम्मच शहद आधा चम्मच दालचीनी) गरम पानी के साथ, ये हाई बीपी के लिए बहुत अच्छी दवा है. दूसरी दवा है मेथी दाना, मेथी दाना आधा चम्मच लीजिये एक ग्लास गरम पानी में और रात को भिगो दीजिये, रात भर पड़ा रहने दीजिये पानी में और सुबह उठ कर पानी को पी लीजिये और मेथी दाने को चबा के खा लीजिये. ये बहुत जल्दी आपकी हाई बीपी कम कर देगा, डेढ़ से दो महीने में एकदम स्वाभाविक कर देगा. तीसरी दवा है हाई बीपी के लिए अर्जुन की छाल. अर्जुन की छाल को धूप में सूखाकर पीसकर पावडर बना ले. आधा चम्मच पावडर, आधा ग्लास गरम पानी में मिलाकर उबाल ले, और खूब उबालने के बाद इसको चाय की तरह पी लें. यह हाई बीपी, कोलेस्ट्रोल, ट्राईग्लिसाराईड, मोटापा कम करता है, हार्ट में अगर कोई ब्लोकेज है तो वो ब्लोकेज को भी निकाल देता है. अगर आपका दिल कमजोर है तो आप जरुर अर्जुन की छाल लें.

चौथी दवा है लौकी का रस. एक कप लौकी का रस सबेरे खाली पेट नास्ता करने से एक घंटे पहले लें. इस लौकी की रस में पांच धनिया पत्ता, पांच पुदीना पत्ता, पांच तुलसी पत्ता, तीन-चार काली मिर्च पिस के ये सब मिलाकर पीयें. ये हृदय को व्यवस्थित तथा कोलेस्ट्रोल को ठीक रखेगा, डाईबेटिस में भी काम आता है.

पांचवी दवा है बेल पत्र. पांच बेल पत्र ले कर पत्थर में पिस कर उसकी चटनी बनाइये अब इस चटनी को एक ग्लास पानी में डाल कर खूब गरम कर लीजिये, इतना गरम करिए के पानी आधा हो जाये, फिर उसको ठंडा करके पी लीजिये. यह सुगर को भी सामान्य कर देगा. जिनको उच्च रक्तचाप और सुगर दोनों है उनके लिए बेल पत्र सबसे अच्छी दवा है.

छठवी दवा है हाई/लो बीपी/सूगर /दमा/अस्थमा/थाईराइट/गठिया के लिए-देशी गाय का मूत्र आधा कप रोज सुबह खाली पेट पीएँ. बहुत जल्दी ठीक कर देता है. बस सावधानी यह रक्खे कि गाय शुद्ध रूप से देशी हो और वो गर्भावस्था में न हो.

निम्न रक्तचाप के लिए सबसे अच्छी दवा है गुड़. ये २५ ग्राम गुड़ एक ग्लास पानी में मिलाके, थोड़ा नमक, थोड़ा नीबू का रस मिलाके दिन में दो-तीन बार पिये.

अगर आपके पास पैसे है तो रोज अनार का रस नमक डालकर पियें गन्ने का रस, संतरे का रस, अनन्नास का रस नमक डालकर पीये लो बीपी ठीक हो जायेगा.

मिसरी और मक्खन मिलाके खायें, दूध में घी मिलाके पियें, एक ग्लास देशी गाय का दूध और एक चम्मच देशी गाय की घी मिलाके रात को पीने से लो बीपी बहुत अच्छे से ठीक होगा.

नमक का पानी दिन में दो तीन बार पीये, गरीबों लिए सबसे अच्छा है

देखो भईया कह देत हों हंसियों मत...

☺ पड़ोसी ने औपचारिकतावश पूछा रात में आप पति-पत्नी में काफी झगडा हो रहा था, जबकि कल शाम ही आपने बताया था कि आप अपने घर में शांति के साथ रहते हैं.
दूसरे पड़ोसी ने जानकारी दी-मेरी बीबी का नाम ही शांति है.

☺ एक महिला ने बैंक जाकर नई चेक बुक मांगी. क्लर्क ने कहा कि आप पहले ही तीन चेकबुक ले चुकी है, क्या वे खत्म हो गई?
महिला-नहीं, वे तो कहीं गुम हो गई.
क्लर्क-आपको चेकबुक हिफाजत से रखनी चाहिए, वरना कोई आपके हस्ताक्षर करके पैसा निकाल सकता है.
महिला-नहीं, मैं इतनी मूर्ख नहीं हूं. मैंने पहले ही सारे चेकों पर हस्ताक्षर कर दिए हैं.

☺ पत्नी-मुझे पता नहीं चला कि हमारी शादी के २५ साल कैसे बीत गए?
पति-वर्षो का पता तो कैदी को चलता है, जेलर को नहीं.

☺रीता-तुम मेरे जन्मदिन पर एक कार दो, तो मैं तुम्हें हर जन्म तक चाहूंगी.
ननकू-मैं तुम्हें कार तो दिला दूंगा, पर बात इसी जन्म तक रहने दो.

☺कुंवारे व्यक्ति की परिभाषा-जो हर सुबह अलग दिशा से दफ्तर पहुंचता हो.

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

01-कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना), **02-डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना), **03—हिंदी सेवी सम्मान-** (विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक-किसी भी विधा की रचना), **04-राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **05-राष्ट्रभाषा सम्मान** -(अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए) **06-कला/संस्कृति सम्मान**-(संगीत, नाटक, पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), 07-**बाल साहित्यकार सम्मान**-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना, 08- **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) **09-राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान, प्रमाणिक विवरण), **10-पुलिस हिंदी सेवा सम्मान**-(पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए), **11-सांस्कृतिक विरासत सम्मान**-(भारतीय/स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण) **12-प्रवासी भारतीय सम्मान** (प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हों.) **13-युवा कहानीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम) 14-काव्यश्री 15-कहानीश्री, 16-ग़ज़लश्री, 17-दोहाश्री, **18-विधि श्री** (विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए), **19-डॉक्टरश्री** (डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए)20-**शिक्षकश्री** (शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए)21-**सैनिक श्री** (सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी सेवा के लिए),22-**विज्ञान श्री** (विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है) 23-**प्रशासक सम्मान/प्रशासकश्री** (कुशल प्रशासन अथवा किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा देने के लिए) **24-विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित 100 पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र में:** साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री **समाज के क्षेत्र में:** समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाजश्री, **पत्रकारिता के क्षेत्र में:** पत्रकार शिरोमणि, पत्रकार रत्न, पत्रकारश्री

<u>विशेष:</u>१. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/ बैंक ड्राफ्ट/ मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जाएगी. जो जनवरी 2014 से लागू होगी. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी.

३. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा. किताबों पर हस्ताक्षर न करे। सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा और न अपूर्ण प्रविष्टियों पर विचार किया जाएगा. प्रविष्टि भेजने के पूर्व मांगी वांछित सामग्री को सुनिश्चत करलें

४. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. किसी प्रकार

के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वद्‌जनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१३

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.
मो०: ०६३३५१५५६४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतु प्रविष्टि संदर्भः

महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले..सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा आत्म विवरण निम्नवत हैः-

नामः ....पिता/पति का नामः..

पताः...

....

दू०/मो०संख्या..........................ईमेल-...........................

रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः..विधा....................वर्ष.........................

प्रेषित प्रतियाँ.............. धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि.....................बैंक का नाम..........................

संख्या........................

मैं शपथपूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मुझे स्वीकार्य है.

भवदीय/भवदीया
हस्ताक्षर....................................
पूरा नाम....................................

सलंग्नः

०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैंक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

'अपनी कलम' हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

काव्य खंड के लिए के लिए 10 गीत/10ग़ज़ल/10 नई कविताएं/100दोहे **गद्य खण्ड** के लिए 5 लेख/5 संस्मरण **कहानी खंड** के लिए 5 कहानियां/10 लघु कथाएं

प्रत्येक खण्ड के लिए प्रत्येक रचनाकार को 15 पृष्ठ दिए जाएंगे. सहयोगी आधार पर प्रकाशित होने वाले इस संकलन के लिए रचना के साथ, सचित्र जीवन परिचय, व 1500/रुपये 30 सितम्बर 2013 तक अपेक्षित है. (अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता संःएस.बी. 538702010009259 में अथवा धनादेश/डी.डी. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते हैं.) अपनी रचनाएं निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें:

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
इमेलः sahityaseva@rediffmail.com

आपकी डाक

भाई डॉ० द्विवेदी

पत्रिका का मई-जून-१३ का अंक मिला. आपके बारे में क्या लिखूं? काफी लोगों ने आपके बारे में जो लिखा है, कम है. राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए जो कार्य आपसे हो रहा है, वह अतुलनीय है. मैं प्रशंसा नहीं कर रही, न करती हूं, किन्तु आप जो हिन्दी के लिए कार्य कर रहे हैं, उससे अन्य लोग प्रेरणा लेगें और लेना भी है. मैं यह आशीर्वाद दे रही हूं कि भगवान आपको आपके परिवार को आरोग्य भाग्य प्रदान करें। आपकी बहन

सुश्री बी.एस.शांताबाई

प्रधान सचिव, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, १७८, चौथा क्रास, चामराज पेट, बंगलौर, कर्नाटक

आदरणीय डॉ० द्विवेदी जी,

पत्रिका का मई-जून अंक प्राप्त हुआ. इस अंक में मेरा लेख हिन्दी की श्वास लेने वाले डॉ. गोकुलेश्वर प्रकाशित करके मेरे लेखन कार्य का हौसला बढ़ा दिया है. पुनः धन्यवाद. शुभकामना संदेश-मुख्यमंत्री गुजरात नरेन्द्र मोदी, उन्हें आपके बारें में तथा संस्था विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद की जानकारी पत्र द्वारा भेजी है. उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र आदि राज्यों के साहित्यकारों के आप पर आलेख लिखे हैं. सभी सराहनीय है. उन्हें धन्यवाद. दुःख की बात है कि केरल, आंध्र प्रदेश व दक्षिण के राज्यों के हिन्दी लेखकों के आलेख दिखाई नहीं देते.

-एस.बी.मुरकुटे, क्रास नं.२, आनंद नगर, बड़गांव, बेलगांव, कर्नाटक

परम स्नेही बन्धु द्विवेदीजी

पत्रिका का मई-जून २०१३ का अंक प्राप्त हुआ. जो अधिकांश रूप से आपके व्यक्तित्व कौशल पर आधारित है. पढ़ कर अत्यन्त आनंद काा अनुभव हुआ. मेरे टूटे-फूटे श्रद्धा सुमनों को आपने जो स्थान दिया है उसके लिए मैं आपका सदा आभारी रहूंगा. गद्य अथवा पद्य में जो रचनाएं आपके शुभचिंतकों, साहित्यकारों ने लिखी हैं उसके आप सुपात्र है. अंक पठनीय एवं संग्रहणीय है. जो मेरे पास आपकी धरोहर के संदर्भ में रहेगा.

-रमेश चन्द्र त्रिवेदी,

३५०, सुनगढत्री, पीलीभीत, उ.प्र.

परम आदरणीय द्विवेदी जी

आपके बारे में संपूर्ण विवरण व सेवा वर्णन को पढ़कर खुशी हुई.

-जे.वी.नागरत्लमा, शिमोगा, कर्नाटक

माननीय महोदय

पत्रिका का अंक प्राप्त हुआ. सभी सामग्री स्तरीय चयनित है. लेखों में विषय वैविध्यता है. 'भाग्य एवं घर परिवार' दोनों कहानियां अच्छी लगी. उपयोगी जानकारी और टिप्स महिला पाठकों व सामान्य स्तर के पाठकों को भी आकर्षित करने में सफल है. आपको इस श्रमसाध्य यज्ञ के लिए अभिनन्दन.

-कान्ति अयूयर

सीटी लाईट रोड, सुरत, गुजरात

आदरणीय

पत्रिका का जून-१३ अंक की प्राप्ति हुई. आपके व्यक्तित्व पर लिखे लेख दर्शाते हैं कि हिन्दी में आपके प्राण हैं. आप लम्बे समय तक हिन्दी की सेवाा करते रहे, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ

-डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा

ग्वालियर, म.प.

चित् भी अपनी ..! शेष पृष्ठ २४ का....

से लेकर सब कुछ काम में इतने पिछलग्गू बने रहते हैं कि शासक याा व्यवस्था करने वाला कोई भी रहे लेकिन उसकी बागडोर आप तो हथियाकर ही दम लेने वाले होते हैं. बाप रे, क्या घुमाव है आगे लकीर में. बातें घुमाना कोई आप से सीखें. और क्या लिखा है, यह तो आप ही जानें या फिर भगवान. यानि कि आपने जीवन में बहुत कुछ गोपनीय बातें भी" जरूर. आप मेरे चाचाजी की तरह खुले दिल वाले होने से तो रहे. अब क्या क्या गोपनीय बातें हो सकती हैं, यह बताना हो तो जरा....'

सुनते ही वे झट से उठे और चल दिए दनदनाकर.

खिलखिलाकर हंसते हुए बादल ने कहा-'ऊँ नमः स्वाहाः. अब चाचाजी, आप जाकर चंचल को लेते आइए. छत पर हमें खेलने जाना है और देर हो रही हैं.....हां, लग रहा है...चाय नाश्ता कुछ तो आप कर ही नहीं पाएं होंगे, लेकिन बात यह है कि आपके उस परम मित्र ने आपको मेरे चंचल को कुछ कपड़े वगैरह पहनाने के लिए भी आपको मौका दिए थे कि नहीं..हिंः हिःहिंः.

बादल का विश्लेषण सुनकर अब मुझे भी हंसना ही पड़ा. जाते-जाते मैं चंचल के बजाए उस दिन बादल को को अपनी बांहों में जकड़ लिया और उसके कोमल, कपोल होंठों पर पांच-छह स्नेह चिह्न देने लगा एक के बाद एक बिना रुके. बादल अब एकदम से शरमा गया. चेहरा लाल सा होने लगा. आंखे नीची करके उसने कहा-'छिंः, चाचाजी, मैं क्या अब कोई बच्चा हूं अभी. ...आप इतने बड़े लड़के को भी....आप भी ना ...जाइए.

मैं हंसते हुए आगे कहा, 'चित् भी मेरी अपनी थी, पट् भी.

पत्रकार महासंघ का १४वां स्थापना दिवस सम्पन्न

इलाहाबाद. आज के परिवेश में पत्रकारों को बहुत तनाव, दबाव व असुरक्षा के बीच कार्य करना पड़ता है. इसलिए मैं राष्ट्रीय मिशन 'खुशहाली' आप सबके लिए लाया हूं. शासन-प्रशासन व प्रेस मालिकान को उनके इस कठिन कार्य के लिए उचित मानदेय, सुविधा, सुरक्षा, संरक्षा व स्वास्थ्य पर ध्यान दे तो पत्रकारिता और मजबूत होगी. उक्त बातें भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के १४वें स्थापना दिवस पर 'पत्रकारिता एवं साहित्य का अन्र्त-सम्बंध' विषय पर मुख्य अतिथि बीएचयू वाराणसी के मनोचिकित्सक डा. संजय गुप्ता ने कही. इस अवसर पर 'साहित्यांजलि प्रभा' का लोकार्पण और नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डा. संजय गुप्ता व अध्यक्षता कर रहे पूर्व महापौर चौधरी जितेन्द्र नाथ सिंह तथा महासंघ के संरक्षक रमा कान्त त्रिपाठी ने मां सरस्वती के तैलचित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित करके किया. शिक्षक विधायक सुरेश चन्द्र त्रिपाठी ने पत्रकारों का आभार व अभिनन्दन करते हुए कहा कि ज्यादातर पत्रकार शिक्षक वर्ग से आते हैं, इसलिए शिक्षा, साहित्य समाचार, पत्रकारिता सब एक-दूसरे के सहयोगी हैं.

चौधरी जितेन्द्र नाथ सिंह ने कहा कि आज मुझे बहुत कुछ जानने व सीखने को मिला है. यदि मीडिया न हो तो समाज में जनहित के कोई कार्य न हों. पत्रकारों को हर प्रकार की सुविधाएं मिलनी चाहिए.

इस अवसर पर महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. भगवान प्रसाद उपाध्याय ने मृत्योपरान्त देहदान करने का निर्णय लेते हुए कहा कि हमारे शरीर के अंग केवल पत्रकारों के ही काम आयें अन्य किसी को नहीं.

कार्यक्रम के अन्त में नवगठित कार्यकारिणी सदस्यों को मुनेश्वर मिश्र ने सबको शपथ दिलायी और कहा कि मुझे बड़ी खुशी होती है जब किसी अन्य प्रान्त में महासंघ का विस्तार होता है. कार्यक्रम का संचालन श्याम सुन्दर सिंह पटेल ने किया. इस दौरान रमा कान्त मिश्रा, विजय विद्रोही, अवधेश अग्निहोत्री, विद्या कान्त मिश्र, राम खेलवान पटेल, शिवा कान्त कुशवाहा, अरूण कुमार सोनकर, सतीश कुमार आर्या, श्याम लाल बेगाना, श्रीधर द्विवेदी, सुरेश चन्द्र मिश्रा, विजय चितौरी सहित शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों के पत्रकारों के साथ अन्य जनपदों से भी आए कई पत्रकारगण मौजूद रहे.

डा० भगवान प्रसाद उपाध्याय सम्मानित

इलाहाबाद। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष व साहित्यांजलि प्रभा के संपादक डा० भगवान प्रसाद उपाध्याय को उनके 56वें जन्म दिवस के अवसर पर खुशहाली अभियान द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया. उक्त सम्मान समारोह में बी.एच.यू. के सुप्रसिद्ध मनोचिकित्सक प्रो० डा० संजय गुप्ता, पूर्व महापौर चौधरी जितेन्द्र नाथ सिंह, सुधीर त्रिपाठी, प्रेमजी शुक्ल आदि उपस्थित रहे.

आवश्यकता है

1996 से निरन्तर प्रकाशित विश्व स्नेह समाज मासिक को देश के विभिन्न शहरों में ब्यूरो प्रमुख, विज्ञापन प्रतिनिधियों की जवाबी लिफाफे के साथ लिखें:

विश्व स्नेह समाज (मासिक)
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.
ईमेल: vsnehsamaj@rediffmail.com

डॉ० अनीत पंडा को द ब्लेस्ड जूनो सम्मान

विश्व स्नेह समाज की आजीवन सदस्या व विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की मेघालय की हिन्दी सांसद डॉ. अनीता पंडा को अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन द्वारा आयोजित ११वें एआईपीसी अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस, थाईलैंण्ड-२०१३ में भारतीय भाषा और दक्षिण एशियाई भाषा एवं साहित्य (हिंदी) में महत्वपूर्ण योगदान हेतु 'द ब्लेस्ड जूनो-२०१३ सम्मान प्रदान किया गया.
इस अवसर पर डॉ. पांडा के कविता संग्रह 'दो आब' काा विमोचन संस्थापक प्रो. लारी आजाद द्वारा किया गया. पत्रिका परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई.

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वाराा आयोजित आंतरिक हिन्दी वैज्ञानिक ४०वीं आंतरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया. संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कार्यकारी निदेशक डॉ. एस.एम. नानोटी ने कहा कि संस्थान के राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित संगोष्ठियां निश्चित रूप से वैज्ञानिकों को उत्प्रेरित करने वाली हैं. वैज्ञानिक क्षेत्रों में हिन्दी में आयोजित संगोष्ठियों से संस्थान निश्चित रूप से अनुकरणीय कार्य करेगा. संगोष्ठी का संचालन संस्थान के राजभाषा प्रभारी डॉ. दिनेश चन्द्र चमोला ने की.

डॉ० चकोर सम्मानित

पटना. बज्जिकांचल विकास पार्टी द्वारा मुजफ्फरपुर में आयोजित बज्जी लिच्छवि गणतंत्र महोत्सव में अंग माधुरी के सम्पादक एवं वरीय साहित्यकार डॉ०नरेश पाण्डेय 'चकोर' को 'वज्जिकांचल रत्न' की उपाधि से अलंकृत किया गया. विदित हो कि डॉ. चकोर की लिखित एवं सम्पादित ६२ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है.

राजगुरु को शिखर साहित्य सम्मान

भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर, बिहार द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान महोत्सव-२०१३ में वयोवृद्ध साहित्यकार आचार्य शिव प्रसाद सिंह राजभर 'राजगुरु' जबलपुर, म.प्र. को उनकी कालयजी कृति 'चुप मत बैठ कबीर' पर 'गिरधर राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान से विभूषित एवं अलंकृत किया गया. राजगुरु को पत्रिका परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई.

समाज सेवियों को स्व. पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति सम्मान

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष स्व० पवहारी शरण द्विवेदी की स्मृति में गत वर्ष से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान करने वाले समाज सेवियों को स्व० पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान प्रदान किया जाएगा. इस सम्मान में **पाँच हजार एक रुपये नगद,** स्मृति पत्र प्रदान किए जाएँगे. प्रतिभागियों को अपने समाज सेवा का प्रामाणिक विवरण कार्यालय के पते पर 30.09.2013 तक भेजना होगा.

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद-211011, उ.प्र.

आवश्यक सूचना

विश्व स्नेह समाज मासिक पत्रिका की वार्षिक सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित श्री बालाराम परमार 'हंसमुख' पुणे महाराष्ट्र की कृति 'नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता की प्रति निःशुल्क प्रदान की जाएगी. इस योजना का लाभ उठाने की शीघ्र अपना सदस्यता फार्म भर कर भेजें. यह योजना प्रतियों के उपलब्ध रहने तक लागू रहेगी.

कोढ़

नेता मंचासीन थे दहेज को लेकर जोर-शोर से भाषण दिए जा रहे थे कोई दहेज देने के पक्ष में तो कोई विपक्ष में. बहस छिड़ी हुई थी. एक खद्दरधारी नेता माइक पर अपनी बुलन्द आवाज में पूरे जोश में भाषण दे रहे थे. श्रोताओं को प्रभावित कर रहे थे कि दहेज नहीं लेना चाहिए ना ही देना चाहिए. तालियों की गड़गड़ाहट से हाल गूंज रहा था. हाल से बाहर निकलते हुए उनके भाषण से प्रभावित कुछ लोग उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे. भाषणोंपरांत कुछ चमचे चाटुकारिता में लगे थे. कोई कह रहा था वाह, क्या आपके उच्च्व विचार है. तो कोई कह रहा था हम तो कायल हो गए आपके विचारों के आप प्रशंसनीय है. आप तो पूज्यनीय हैं. यदि समाज में आपके जैसे विचार और लोगों के भी हो जाए तो दहेज-कुप्रथा से गरीबों को निजात मिल जाए. गरीब अपनी कन्या के हाथ खुशी-खुशी पीले कर दे. जन्म लेने ही गला न घोंटे.

नेताजी के भाषण से प्रभावित एक व्यक्ति साहस जुटा उनके पास आया और हाथ जोड़कर बोला. मेरी कन्या व आपका पुत्र विवाह योग्य है यदि मेरी बेटी को आप बहू रूप में स्वीकार कर लें तो मैं आपका आभारी रहूंगा. आप जैसे जो देहज के लालची नहीं हैं उन्हें अपनी कन्या का हाथ थमा कर मैं अपने को धन्य समझूंगा.

नेता जी का उत्तर था-'भई. हाथी के दांत खाने के और, और खिाने के और होते हैं. फिर हम तो ठहरे नेता. हमारी कथनी और करनी में तो अन्तर स्वाभाविक ही है. भाषण था वह? कन्या का दहेज बिन-घर से जाना अपशकुन होता है. धरोहर राशि को तो ब्याज सहित देना पड़ता है. सज्जन व्यक्ति दीर्घश्वास लेते हुए बोला-'काश यह कोढ़ समाज से दूर हो पाता. 📖 **सुनीता शर्मा,** गुड़गांव, हरियाणा

बोझ

माँ के देहान्त के बाद इकलौता बेटा बूढ़े बाप को अपने साथ शहर ले गया और कुछ ही दिनों में घर की ढेरों जिम्मेवारियां उनके कमज़ोर कंधों पर लाद दी. एक शाम राशन के भारी थैले उठाए वह घर का बरामदा लांघ रहे थे कि अंदर बहू को अपनी सहेलियों से कहते सुना, 'अब इस बुढ़ापे में पिताजी का बोझ हम नहीं उठाएंगे तो और कौन उठाएगा.' यह सुन हांफ़ते और पसीना पसीना होते लाचार पिता यह सोचने पर विवश हो गए कि आख़िर कौन किसका बोझ उठा रहा है?

-**सुकीर्ति भटनागर,** पटियाला, पंजाब

फरार

'रानी, नीरज से प्रेम करती थी और उसे अपना जीवन साथी बनाना चाहती थी. रानी ने अपनी इच्छा माता-पिता को बतायी. नीरज दूसरी जाति का था इसलिए मां-बाप ने अपना दामाद बनाने से इंकार कर दिया.

रानी जवानी के जोश में कोई ऐसा कदम न उठा ले, जिससे समाज में उन्हें बेइज्जत होना पड़े. इस डर से पिता ने लड़का ढूंढकर उसका रिश्ता पक्का कर दिया. निश्चित दिन बारात आयी. रानी ने दरवाजे पर दूल्हे के गले में वरमाला डाली, लेकिन फेरों से पहले अपने प्रेमी नीरज के साथ फरार हो गई.

हम औरत को जीवन साथी चुनने की आजादी क्यों नहीं देते? अगर ऐसा हो जाये तो लड़की को भागने की जरुरत क्यों पड़ेगी? 📖 **किशन लाल शर्मा,** आगरा, उ.प्र.

पैसा

प्रियंका व अमित पिछले कई वर्षों से इकट्ठे काम कर रहे थे। दोनों अपने-अपने काम में एक-दूसरे से बढ़कर. दोनों के विभाग अलग-अलग होते हुए भी एक-दूसरे की मदद के लिए सदैव तैयार रहते थे. समय पर काम निबटा कर, चाय-नाश्ता इकट्ठा करना, कुछ गपशप के लिए समय निकालना उनकी दिनचर्या सी बन गया थी. दोनों एक-दूसरे के लिए काफी समर्पित थे. अमित के बड़े भाई की शादी थी। वह १५ दिन की छुट्टी लेकर ऑफिस से चला गया। शादी में काम की व्यस्तता के साथ वह प्रियंका को बीच-बीच में फोन करना भी नहीं भूलता था. उसने भईया की शादी के बाद प्रियंका के सामने शादी का प्रस्ताव रखने का पूरा मन बना लिया था. शादी के सब कार्य निबटा कर छुट्टी खत्म होने पर अमित ऑफिस पहुँचा. इस बीच उसके पुराने बॉस जा चुके थे व एक बलिष्ठ, सुगठित युवा ने उनकी जगह ज्वायन कर लिया था. अमित सुबह से ही प्रियंका के साथ बात करने का मौका ढूंढ रहा था परन्तु वह पहले से ज्यादा व्यस्त व खुश नज़र आ रही थी. अमित ने दोपहर के खाने का इन्तज़ार किया जोकि अकसर वह कैंटीन में किया करते थे. अमित काम निबटा कर वहाँ पहुँचा परन्तु हैरान कि प्रियंका नए बॉस के साथ सामने वाले पाँच सितारा के लिए जा चुकी थी कि अमित के दोस्त लोकेश ने उसका हाथ ज़ोर से दबाया और कहा, 'अमित आज के ज़माने में पैसा चाहिये पैसा.' अमित जड़ सा हुआ पाँव से जमीन कुरेदता रह गया।

-**शबनम शर्मा,** सिरमौर, हि.प्र.

समीक्षा

काम-क्रोध-मद-लोभ लुटेरे, बैठें हैं सब तुझको घेरे!

प्रयास नामक शीर्षक से अभी हाल में प्रकाशित राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से महामहिम राष्ट्रपति से सम्मानित आदर्श शिक्षक, व्यवहार व रिश्ते को निभाने में माहिर आदर्श व्यक्ति ओम प्रकाश त्रिपाठी का पहला काव्य संग्रह हैं. ११२ पृष्ठीय इस काव्य संग्रह में कविताएं, मुक्तक व ग़ज़लों का लेकर कुल १०३ छोटी-बड़ी रचनाए समाहित हैं. वीणावादिनी मां सरस्वती की वंदना से शुरु हुआ तारतम्य मुक्तक पर जाकर समाप्त हुआ है. बेहतर आवरण से सजे इस काव्य संग्रह की रचनाओं विषय विविधताओं से भरपूर हैं. कवि ने स्वयं ही लिखा है कि

'ये कोई कविता नहीं है,
सिर्फ मन की गर्जना है,
खोट हैं इसमें बहुत पर,
भाव की यह अर्चना है।

उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से रचनाकार ने यह स्वयं स्वीकार किया है कि कवि की भावना है इसमें खोट होना लाजिमी है. ऐसी स्वीकरोक्ति बहुत कम देखने को मिलती है. रचनाओं की रचनाओं में कमियां होने के बावजूद आजकल के रचनाकार उनकी कमियों को बताने पर भी सुनने तक को तैयार नहीं होते हैं. यह इस काव्य संग्रह के रचनाकार की महानता ही है कि उसने स्वीकार किया है. इसलिए एक समीक्षक के नाते इस संग्रह की कमियों पर ध्यान केन्द्रित करना न्याय संगत नहीं होगा.

सोनभद्र की प्यारी धरती,
देश की न्यारी धरती,
नदियों, पहाड़ों और गुफाओं की है यह धरती,
ऋषियों, मुनियों एवं सेनानियों की धरती।

रचनाकार को अपनी जन्म और कर्म भूमि से कितना गहरा लगाव है कि कवि ने अपने इस संग्रह की शुरुआत इसी कविता से की है.

आज मानव मानव धर्म को भूल चुका है, यानि मानवता तो कहीं गुम हो गई है. बस अपना स्वहित ही दिखाई देता है. 'मानवधर्म' नामक शीर्षक वाली रचना ने रचनाकार मानवधर्म को निभाने के लिए प्रेरित करने वाली पंक्तियां लिखी है. देखिए-

यदि कर न सको कल्याण किसी का,
तो बुरा भी कभी मत करना।
पिलाने को यदि मिले न अमृत,
तो ज़हर पिलाने से भी डरना।
छू न सको यदि चरण किसी का,
तो हाथ जोड़ वन्दन करना।

तो दूसरी तरफ श्रृंगार से ओत-प्रोत रचना 'मेरे सपनों में आया करो' भी समाहित है:-

कभी कभी मेरे सपनों में आया करो,
जब पड़ा रहूं गहरी नींद में तो मुझे जगाया करो।

'भारत की पहचान' में रचनाकार ने भारतीय संस्कृति को उकेरने का पूरा प्रयास किया है. तो 'हमारे पड़ोस में' नामक रचना में त्रिपाठी जी ने वर्तमान परिवेश को बड़ी ही खूबसूरती से लरो में पिरोया है:-

चारो ओर उचक्के चोर लुटेरे हैं,
हमारे पड़ोस में शैतानों के डेरे हैं,
कृतघ्नों, बदमाशों के इस पड़ास में,
शातिर, अपराधियों के रैन बसेरे हैं।।

'मौसम बदलने लगा है' में त्रिपाठी जी ने आज के परिवेश में मानवीय व्यवहार व संवेदना को उकेरते हुए लिखा है-

धीरे धीरे मौसम बदलने लगा है
मानव-मानव को अब छलने लगा है,
सभ्यता के विकास भईल बड़ी तेजी से,
किन्तु सद्भावना का महल अब ढहने लगा है।

प्रस्तुत संग्रह में कई रचनाएं भोजपुरी में भी है. एक मुक्तक में दहेज की समस्या को कैसे उकेरा है देखिए

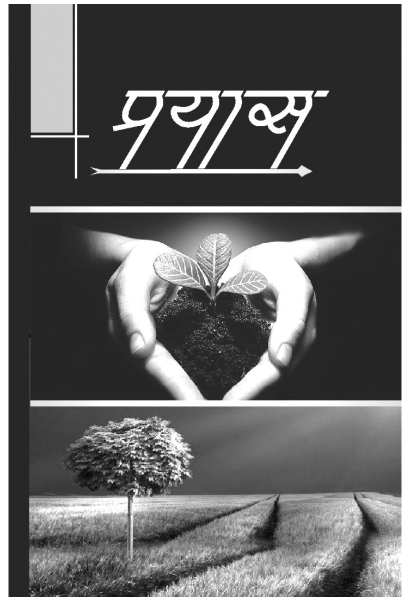

दहेज समाज का एक दानव है,
इसके चक्कर में भटक रहा मानव है,
बड़े प्यार से पाली हुई बेटी का
यह एक घोर शत्रु और मौत का फन्दा है

इसी तरह पैसे के यार यहां, गांव, नारी के रूप, गांव का आदमी, ग़ज़ल, वन्य जीव संरक्षण आदि रचनाएं भी अच्छी हैं. कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यद्यपि श्री त्रिपाठी जी काव्य क्षेत्र के मजे हुए खिलाड़ी नहीं है फिर भी उनकी रचनाओं को पढ़कर उन्हें भावी अच्छा काव्य खिलाड़ी कहने में गुरेज नहीं किया जा सकता. सामान्यतः रचनाएं दोषमुक्त हैं. प्रथम प्रयास है काव्य क्षेत्र है का तो थोड़ी बहुत कमियों स्वीकार करने योग्य होती है. प्रस्तुत संग्रह स्वागत करने व पढ़ने योग्य है. श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी जी को पत्रिका परिवार की तरफ से ढेरो बधाई.

मूल्यः रु० 150/ पेपर बैक
रु० २००/साजिल्द

प्रकाशकः विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११